।। श्रीमद्‌भगवद्‌भक्तेभ्यो नमः ।।

श्रीमद् गोस्वामी श्रीनाभाजी कृत-

मूल-भक्तमाल

(द्वितीय संस्करण)

प्रकाशक :

श्रीरामानन्द पुस्तकालय

सुदामाकुटी, श्रीधाम वृन्दावन (मथुरा)

मूल्य 20) रुपये

।। श्रीमद्भगवद्भक्तेभ्यो नमः ।।

श्रीमद् गोस्वामी श्रीनाभाजी कृत—

मूल—भक्तमाल

(द्वितीय संस्करण)

प्रकाशक :

श्रीरामानन्द पुस्तकालय

सुदामाकुटी, श्रीधाम वृन्दावन (मथुरा)

मूल्य २०) रुपये

श्रीभक्तमाल–वन्दना

नमो नमो श्रीभक्त सुमाल।

जाके सुनत महातम नाशत, उर झलकत राधा नँदलाल।।
गद्गद स्वर पुलकत अँग अंगनि, लोचन बरषत अँसुवन जाल।
उतरि जात अभिमान व्याल विष, लेत जिवाय सुरस तिहिं काल।।
होत प्रीति हरि भक्तजनन सौं, लेत शीघ्र हठि चरण प्रछाल।
तजत कुसंग लेत सत् संगति, भाग जगत् कोउ अद्भुत भाल।।
निसिवासर सोवत अरु जागत, रोम रोम ह्वै करत निहाल।
श्रीअग्र–नारायणदास प्रिया प्रिय, प्रगटीं जीवन रसिक रसाल।।

सन्त–वन्दना

वांछाकल्पतरुभ्यश्च, कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो, वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक, व्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मदाल्भ्यान्।
रुक्मांगदार्जुनवशिष्ठविभीषणादीन्, एतानहं परमभागवतान्नमामि।।

सन्त सरल चित जगत् हित, जानि सुभाउ सनेहु।
बाल विनय सुनि करि कृपा, राम चरण रति देहु।।
वन्दौं सन्त समान चित, हित अनहित नहिं कोय।
अंजलिगत शुभ सुमन जिमि, सम सुगन्ध कर दोय।।
बार बार पद वन्दौं, (श्री) नाभा आभा ऐन।
(जिन) काढ्यौ गाभा वेद को, भक्तमाल रस दैन।।
प्रियादास के पद कमल वन्दौं बारम्बार।
कीनि भक्तिरसबोधिनी टीका अति सुखसार।।

सन्त हैं अनन्त गुन अन्त कौन पावै जाकौ,
जानै रतिवन्त कोऊ रीझै पहिचानिकै।
औगुन न दीठि परै देखत ही नैंन भरै,
ढरै पग ओर उर प्रेम भर आनिकै।।

जोपै घटि क्रिया कछु देखियत इन माँझ,
करिलै विचार हरि ही की इच्छा मानिकै।
बालक सिंगारिकै निहारि नेहवती माता,
देत जो दिठौना कारौ दीठि डर जानिकै।।

–(श्रीप्रियादास कृत अनन्यमोदिनी से)

अथ श्रीवैष्णवदासजी कृत

श्रीभक्तमाल–माहात्म्य

–दोहा–

श्रीनारायनदास जू कृत भक्तन्ह की माल।
पुनि ताकी टीका करी प्रियादास सु रसाल।।
ताकौ साधुन के कहे कहौं महातम बानि।
लै ग्रन्थनि मत आधुनिक परिचै रस की खानि।।
भक्तन की महिमा कही कपिलदेव भगवान्।
नारायन आधीन हैं मैं कह कहौं बखान।।
सब संसार सुआरसी जन महिमा प्रतिबिम्ब।
रति दृग बिन सूझै नहीं अन्धे को वह बिम्ब।।
वेद शास्त्र के श्रवण को अति फल हरि निरधार।
सो याके श्रोता अहैं महिमा अगम अपार।।
भयौ चहै हरि पाँति को सुनै सोइ हरषाय।
तहाँ दोय इतिहास हैं सुनिये चित्त लगाय।।

—चौपाई—

प्रियादास जू के सुमित्र वर।
श्रीगोवर्धननाथ नाम कर।।
ते श्रीभक्तमाल रंग छाये।
पढ़ि साँभरि की रामति आये।।
मग में श्रीगोविन्ददेव जो।
तिनके दर्शन को गमने सो।।
तहँ श्रीराधारमन पुजारी।
हरिप्रिय रसिक अनन्य सु भारी।।
तिन तिनकौं राखो अटकाई।
भक्तमाल सुनिवे के ताईं।।
होन लगी तहँ भक्त सुमाला।
जहाँ विराजत गोविन्द लाला।।
जयपुरवासी सुनिवे आवैं।
प्रेम मुदित ह्वै अश्रु बहावैं।।
कछु दिन बाँचि बन्द करि दीनी।
श्रोतन ते निश्चय यह कीनी।।
साँभरि की रामति करि आऊँ।
तबही पूरी कथा सुनाऊँ।।
रामति गये बगदि फिरि आये।
कथा कहन को फिरि बैठाये।।
कहँ तक भई सँभार सु नाहीं।
श्रोता अरु वक्ता भ्रम माहीं।।

श्रीगोविन्ददेव विख्याता।
कही पुजारी सौं यह बाता।।
श्रीरैदास भक्त की गाथा।
भई कहो आगे अब नाथा।।

—दोहा—

सुनि सु पुजारी के दृगन पानी बह्यौ अपार।
याके श्रोता आप हैं यह कीनी निरधार।।

—चौपाई—

पुनि दूजौ इतिहास सुनौ अब।
प्रियादास टीका कीनी जब।।
तब ब्रज परिकरमा महँ आये।
फिरत फिरत होड़ल जा छाये।।
लालदास तहँ रहे महन्ता।
जनसेवी अनन्य रसवन्ता।।
सब समाज तिन रोकि सु लीनो।
बाँचो भक्तमाल हठ कीनो।।
भक्तमाल तहँ होन सु लागी।
सुनन लगे सब लोग सुभागी।।
इक दिन निसि तहँ आये चोरा।
सबै वस्तु लीनी टकटोरा।।
ठाकुर हू को ते लै गये।
हरि ही के ये कौतुक नये।।

प्रात भये सबही दुख छाये।
प्रियादास हू अति अकुलाये।।
कही कथा न रसोई कीनी।
महादुक्ख में मति अति भीनी।।
ठाकुर को ये चरित न प्यारे।
ताते चोरन संग पधारे।।
श्रीमहन्त बोले कर जोरी।
हम कहँ तजि ठाकुर गे चोरी।।
तुमहू त्याग करोगे जोपै।
मेरी कुगति होयगी तोपै ।।
ताते हरि इच्छा मन दीजै।
कहिये कथा रसोई कीजै।।
प्रियादास बोले यों सुनहू।
अब मैं कथा न कहिहौं कबहू।।
श्रीनाभा यों वचन उचारे।
हरि को जन चरित्र ये प्यारे।।
सो झूठी अब भई यहाँई।
कथा त्याग हरि गये पराई।।

–दोहा–

यों कहिकै भूखे रहे काहुहिं परी न चैन।
सुपने चोरन ते कहैं ठाकुर जू यों बैन।।

—चौपाई—

मोहिं जहाँ को तहँ करि आवौ।
ना तर तुम बहुतै दुख पावौ।।
इक दुख भक्त रहे दुख माहीं।
भक्तमाल पुनि सुनी सु नाहीं।।
दुहरे दुक्ख परे हैं हम पर।
चौहर दुख डारूँगो तुम पर।।
सुनिकै चोर उठे अधराता।
ठाकुर को लै हरषित गाता।।
गावत बजवत नाचत आये।
संग सकल सामग्री लाये।।
प्रातःकाल होन नहिं पायो।
समाचार द्विज एक सुनायो।।
चोर तिहारे ठाकुर ल्यावत।
नाचत गावत बजवत आवत।।
सुनि सब साधु निपट हरषाये।
करत कीरतन सनमुख धाये।।
सुधि—बुधि गई प्रेम में छाये।
जाय परस्पर लपटत भाये।।
चोरहु कुछ कहि सकै न बतियाँ।
दृग भरि आवत फाटत छतियाँ।।
आँसू पोंछत गद्‌गद बानी।
सुपने की सब कथा बखानी।।

सुनि सबने अति ही सुख पायौ।
प्रेम मगन मन दुक्ख नसायौ।।
मन्दिर में प्रभु को पधरायौ।
बहु मंगल उच्छव करवायौ।।
भक्तमाल की कथा सुहाई।
नाम कीरतन सहित कहाई।।
याके श्रोता श्रीहरि अहहीं।
पुनि–पुनि साधु प्रेमवश कहहीं।।

–दोहा–

हाथ कंकनहिं आरसी कहा दिखाये माहिं।
हरि श्रोता बिन सबन के यों मन अटकत नाहिं।।

–चौपाई–

श्रोता वक्ता को फल जोई।
कापै कहि आवत है सोई।।
जो लिखाय राखै उर माहीं।
अन्त समै हरि प्राप्ति कराहीं।।
तहाँ एक सुनिये इतिहासा।
क्वौ जन प्रियादास के पासा।।
आय कही म्वहिं देहु लिखाई।
भक्तमाल सुन्दर सुखदाई।।
प्रियादास पूछी सुखरासा।
कहन सुनन कछु है अभ्यासा।।

तिन कह मैं कछु कहि नहिं जानौं।
सुनिवे हू की गति न पिछानौं॥
आपु कही तब करिहौं काहा।
बात सुनाय दिखाई चाहा॥
महाराज मैं जग व्यौहारी।
गृह कामन में अटक्यौ भारी॥
साधु संग को अवसर नाहीं।
ताते मैं सोची मन माहीं॥
मरती बार हिये पर धरिहौं।
इतने साधु संग उबरिहौं॥
सुनि यह बात नेत्र भरि आये।
बहुत बड़ाई करि सुख छाये॥
ताको पोथी दई लिखाई।
सो लै घर गवन्यौ सुख पाई॥
घर कारज में अटक्यौ भारी।
आई ताहि मीच भयकारी॥
यम के दूतन आय दबायौ।
दई त्रास अरु कण्ठ रुकायौ॥
बेटा पोते ढिंग बिललाता।
नैन सैन दै कही सुबाता॥
भक्तमाल की पोथी लाई।
मम छाती ते देहु लगाई॥
ते उठाये पोथी लै आये।

धरि छाती पर अचरज छाये।।
धरतहिं यम के दूत भजे यों।
सूरन के आगे कायर ज्यों।।
कण्ठ खुल्यौ नैंननि जल ढार्‌यौ।
हरे कृष्ण गोविन्द उचार्‌यौ।।
बहु भक्तन के दर्शन पायौ।
हिये माँझ आनन्द समायौ।।
सुत हरषित सब पूछत बाता।
कहा भयौ सो कहिये ताता।।
तिन कह यमदूतन दुख दीनौ।
भक्तनि अब उबार मैं लीनौ।।
नामदेव रैदास कबीरा।
सैन धना पीपा अति धीरा।।
ठाढ़े सकल कहत हैं बाता।
हमरे संग चलो अब ताता।।
सो मैं अब इनके संग जैहौं।
यमदूतन के मुख न चितैहौं।।
यह कहि राम–कृष्ण उच्चारत।
नैंन मूँदि हरि को उर धारत।।
प्रान त्यागि हरि धाम सिधायौ।
बेटन के उर अति सुख छायौ।।
तबते तिनने नेम करे हैं।
अन्त समय उर ग्रन्थ धरे हैं।।

तिनको कुटुम वनहिं को आयौ।
तिननि सबै यह चरित सुनायौ।।
सो हम लिखन कियो है सही।
सब दिन भक्तनि महिमा रही।।
शेष महेश जासु गुन गावैं।
तेऊ चरण रेणु मन लावैं।।
आपु ते अधिक दास को गावै।
जन की महिमा कहि नहिं आवै।।
प्रियादास अति ही सुखकारी।
भक्तमाल टीका विस्तारी।।
तिनकौ पौत्र परम रँग भीनौ।
वैष्णवदास महातम् कीनौ।।

—दोहा—

भक्तमाल की गन्ध को लेत भक्त अलि आय।
भेक विमुख ढिंगहीं बसैं रहे कीच लपटाय।।

।। इति भक्तमाल—माहात्म्य सम्पूर्णम्।।

मिति माह वदी ६ संवत् १८८६ वृन्दावन

●

।। श्रीमदभगवद्भक्तेभ्यो नमः ।।

श्रीभक्तमाल

।। श्रीप्रियादासजी कृत आज्ञानिरूपण मंगलाचरण ।।

(भक्तिरसबोधिनी टीका)

मनहरन कवित्त

महाप्रभु श्रीकृष्ण–चैतन्य मनहरन जू के चरन कौ ध्यान मेरे नाम मुख गाइयै।
ताही समय नाभा जू ने आज्ञा दई लई धारि टीका विसतारि भक्तमाल की सुनाइयै।।
कीजिये कवित्तवन्द छन्द अति प्यारो लगै जगै जग माँहि कहि वाणी बिरमाइयै।
जानौं निज मति ऐपै सुन्यौं भागवत शुक द्रुमनि प्रवेश कियौ ऐसेई कहाइयै।।

टीका का नाम स्वरूप वर्णन

रची कविताई सुखदाई लागै निपट सुहाई औ सचाई पुनरुक्ति लै मिटाई है।
अक्षर मधुरताई अनुप्रास जमकाई अति छबि छाई मोद झरी–सी लगाई है।।
काव्य की बड़ाई निज मुख न भलाई होति नाभा जू कहाई याते प्रौढ़िकै सुनाई है।
हृदै सरसाई जोपै सुनिये सदाई यह भक्तिरसबोधिनी सुनाम टीका गाई है।।

श्रीभक्ति स्वरूप वर्णन

श्रद्धाई फुलेल औ उबटनौ श्रवन कथा मैल अभिमान अँग–अंगनि छुड़ाइये।
मनन सुनीर अन्हवाइ अंगु छाइ दया नवनि वसन पन सौंधो लै लगाइये।।
आभरन नाम हरि साधुसेवा कर्णफूल मानसी सुनथ संग अंजन बनाइये।
भक्तिमहारानी कौ सिंगार चारु बीरी चाह रहै जो निहारि लहै लाल प्यारी गाइये।।

श्रीभक्ति पंचरस वर्णन

शान्त दास्य सख्य वात्सल्य औ शृंगार चारु पाँचौ रस सार विस्तार नीके गाये हैं।
टीका को चमतकार जानौगे विचारि मन इनके स्वरूप में अनूप लै दिखाये हैं।।
जिनके न अश्रुपात पुलकित गात कभूँ तिनहूँ को भावसिन्धु बोरिकै छकाये हैं।
जोलौं रहैं दूर रहैं विमुखता पूर हियो होय चूर चूर नेकु श्रवण लगाये हैं।।

श्रीभगवद् प्रियता

पंचरस सोई पचरंग फूल थाके नीके पीके पहिराइवे को रचिकै बनाई है।
वैजयन्ती दाम भाववती अलि नाभा नाम लाई अभिराम स्याम मति ललचाई है।।
धारी उर प्यारी किहूँ करत न न्यारी अहो ! देखौ गति न्यारी ढरि पायन कौं आई है।
भक्ति छबि भार ताते नमित शृंगार होत, होत वश लखै जोई याते जानि पाई है।।

सत्संग प्रभाव वर्णन

भक्तितरु पौधा ताहि विघ्न डर छेरी हू कौ वारि दै विचार वारि सींच्यो सत्संग सौं।
लाग्योई बढ़न गोदा चहुँदिसि कढ़न सो चढ़न आकाश यश फैल्यो बहुरंग सौं।।
सन्त उर आलवाल सोभित विसाल छाया जियें जीव जाल ताप गये यों प्रसंग सौं।
देखौ बढ़वारि जाहि अजाहू की शंका हुती ताहि पेड़ बाँधे झूमें हाथी जीते जंग सौं।।

श्रीनाभाजी का वर्णन

जाको जो स्वरूप सो अनूप लै दिखाय दियौ कियो यों कवित्त पट मिहीं मध्य लाल है।
गुण पै अपार साधु कहैं आँक चारि ही में अर्थ विसतार कविराज टकसाल है।।
सुनि सन्त सभा झूमि रही अलि श्रेणी मानो घूमि रही कहैं यह कहा धौं रसाल है।
सुने हे "अगर" अब जाने मैं अगर सही चोवा भये नाभा सौं सुगन्ध भक्तमाल है।।

श्रीभक्तमाल स्वरूप वर्णन

बड़े भक्तिमान् निसिदिन गुन गान करैं हरैं जग पाप जाप हियो परिपूर है।
जानि सुखमानि हरि सन्त सनमान सचे बचेऊ जगत् रीति प्रीति जानी मूर है।।
तऊ दुराराध्य कोऊ कैसे कै अराधि सकै समझो न जात मन कम्प भयो चूर है।
शोभित तिलक भाल माल उर राजै ऐपै बिना भक्तमाल भक्तिरूप अति दूर है।।

(टीकाकर्त्ता—श्रीप्रियादासजी अपने श्रीगुरुदेवजी का वर्णन करते हैं)

रसिकाई कविताई जाहि दीनी तिनि पाई भई सरसाई हिये नव—नव चाय हैं।
उर रंगभवन में राधिकारवन बसैं लसैं ज्यौं मुकुर मध्य प्रतिबिम्ब भाय हैं।।
रसिक समाज में विराज रसराज कहैं चहैं मुख सब फूलैं सुख समुदाय हैं।
जन मन हरि लाल मनोहर नांव पायो उनहूँ को मन हरि लीनौ याते राय हैं।।

इनहीं के दास—दास—दास प्रियादास जानौं तिन लै बखानौं मानौं टीका सुखदाई है।
गोवर्द्धननाथ जू कें हाथ मन पर्‌यौ जाको कर्‌यौ वास वृन्दावन लीला मिलि गाई है।।
मति उनमान कह्यौ लह्यौ मुख सन्तनि के अन्त कौन पावै जोई गावै हिय आई है।
घट बढ़ जानि अपराध मेरौ क्षमा कीजे साधु गुनग्राही यह मानि मैं सुनाई है।।

कीनी भक्तमाल सुरसाल नाभा स्वामी जू ने तरे जीव जाल जग जन मन मोहनी।
भक्तिरसबोधिनी सो टीका मति सोधिनी है बाँचत कहत अर्थ लागै अति सोहनी।।
जोपै प्रेम लक्षना की चाह अवगाहि याहि मिटै उर दाह नेकु नैंननि हूँ जोहनी।
टीका अरु मूल नाम भूल जात सुनै जब रसिक अनन्य मुख होत विश्वमोहनी।।

टीका का उपसंहार

नाभा जू कौ अभिलाष पूरन लै कियौ मैं तौ ताकी साखी प्रथम सुनाई नीके गाइकै।
भक्ति विसवास जाके ताही कौं प्रकास कीजै भीजै रंग हियो लीजै सन्तनि लड़ाइकै।।
सम्वत् प्रसिद्ध दस सात सत उन्हत्तर फालगुन मास वदी सप्तमी बिताइकै।
"नारायणदास" सुखरासि भक्तमाल लैकै "प्रियादास" दास उर बसौ रहौ छाइकै।।

टीकाकार की विज्ञप्ति

अगिनि जरावौ लैकै जल में बुड़ावौ भावै सूली पै चढ़ावौ घोरि गरल पिवायबी।
बीछू कटवावौ कोटि साँप लपटावौ हाथी आगे डरवावौ ईति भीति उपजायबी।।
सिंह पै खवावौ चाहौ भूमि गड़वावौ तीखी अनी विंधवावौ मोहिं दुख नहीं पायबी।
ब्रजजन प्रान कान्ह बात यह कान करौ भक्त सौं विमुख ताको मुख न दिखायबी।।

मूल–मंगलाचरण

–दोहा–

भक्त भक्ति भगवन्त गुरु चतुर नाम वपु एक ।
इनके पद वन्दन किये नाशहिं विघ्न अनेक।।१।।
मंगल आदि विचारि रह वस्तु न और अनूप।
हरिजन को यश गावते हरिजन मंगल रूप।।२।।
सन्तन निर्णय कियौ मथि श्रुति पुराण इतिहास।
भजिवे को दोई सुघर कै हरि कै हरिदास।।३।।
श्रीगुरु अग्रदेव आज्ञा दई हरि भक्तन को यश गाव।
भवसागर के तरन कौ नाहिन और उपाव।।४।।

चौबीस अवतार

।। छप्पय।।

चौबीस रूप लीला रुचिर श्रीअग्रदास उर पद धरौ।।
जय जय मीन बराह कमठ नरहरि बलि बावन।
परशुराम रघुवीर कृष्ण कीरति जग पावन।।
बुद्ध कल्कि अरु व्यास पृथु हरि हंस मन्वन्तर।
यज्ञ रिषभ हयग्रीव ध्रुववरदैन धन्वन्तर।।
बद्रीपति दत्त कपिलदेव सनकादिक करुणा करौ।
चौबीस रूप लीला रुचिर श्रीअग्रदास उर पद धरौ।।५।।

श्रीचरण–चिह्न

चरण–चिह्न रघुवीर के सन्तनि सदा सहायका।।
अंकुश अम्बर कुलिश कमल जव धुजा धेनुपद।
शंख चक्र स्वस्तीक जम्बुफल कलश सुधाह्रद।।
अर्द्धचन्द्र षट्कोन मीन बिन्दु ऊरधरेखा।
अष्टकोन त्रैकोन इन्द्रधनु पुरुष विशेखा।।
सीतापति पद नित बसत एते मंगलदायका।
चरण–चिह्न रघुवीर के सन्तनि सदा सहायका।।६।।

द्वादश महाभागवत

इनकी कृपा और पुनि समझैं द्वादश भक्त प्रधान।।
विधि नारद शंकर सनकादिक कपिलदेव मनु भूप।
नरहरिदास जनक भीषम बलि शुकमुनि धर्मस्वरूप।।
अन्तरंग अनुचर हरि जू के जो इनकौ यश गावैं।
आदि अन्त लौं मंगल तिनके श्रोता वक्ता पावैं।।
अजामेल परसंग यह निर्णय परमधर्म के जान।
इनकी कृपा और पुनि समझैं द्वादश भक्त प्रधान।।७।।

षोडश पारषद

मो चित्तवृत्ति नित तहँ रहौ जहँ नारायन पारषद।।
विष्वक्सेन जय विजय प्रबल बल मंगलकारी।
नन्द सुनन्द सुभद्र भद्र जग आमयहारी।।
चण्ड प्रचण्ड विनीत कुमुद कुमुदाक्ष करुणालय।
शील सुशील सुषेन भावभक्तन प्रतिपालय।।
लक्ष्मीपति प्रीणन प्रवीन भजनानन्द भक्तनि सुहृद।
मो चित्तवृत्ति नित तहँ रहौ जहँ नारायन पारषद।।८।।

श्रीहरिवल्लभजी

हरिवल्लभ सब प्रार्थौं जिन चरणरेणु आसा धरी।।
कमला गरुड़ सुनन्द आदि षोडश प्रभुपद रति।
हनुमन्त जामवन्त सुग्रीव विभीषण शबरी खगपति।।
ध्रुव उद्धव अम्बरीष विदुर अक्रूर सुदामा।
चन्द्रहास चित्रकेतु ग्राह गज पाण्डव नामा।।
कौषारव कुन्ती बधू पट ऐंचत लज्जा हरी।
हरिवल्लभ सब प्रार्थौं जिन चरणरेणु आसा धरी।।९।।

पद पंकज वन्दौं सदा जिनके हरि नित उर बसैं।।
योगेश्वर श्रुतिदेव अंग मुचुकुन्द प्रियव्रत जेता।
पृथु परीक्षित शेष सूत शौनक परचेता।।
सतरूपा त्रयसुता सुनीति सती सबही मन्दालस।
यज्ञपत्नि ब्रजनारि किये केशव अपने वश।।
ऐसे नर नारी जिते तिनहीं के गाऊँ जसैं।
पद पंकज वन्दौं सदा जिनके हरि नित उर बसैं।।१०।।

अंघ्री अम्बुज पांशु को जनम जनम हौं जाचिहौं।।
प्राचीनबर्हि सत्यव्रत रहूगण सगर भगीरथ।
बाल्मीकि मिथिलेश गये जे जे गोविन्द पथ।।
रुक्मांगद हरिचन्द भरत दधीचि उदारा।
सुरथ सुधन्वा शिविर सुमति अति बलि की दारा।।
नील मोरध्वज ताम्रध्वज अलरक कीरति राचिहौं।
अंघ्री अम्बुज पांशु को जनम जनम हौं जाचिहौं।।११।।

तिन चरण धूरि मो भूरि सिर जे जे हरिमाया तरे।।
रिभु इक्ष्वाकरु ऐल गाधि रघु रै गै शुचि शतधन्वा।
अमूरति अरु रन्तिदेव उतंग भूरि देवल वैवस्वत मन्वा।।
नहुष जजाति दिलीप पुरु यदु गुह मान्धाता।
पिप्पल निमि भरद्वाज दक्ष सरभंग संघाता।।
संजय समीक उत्तानपाद याज्ञवल्क्य जस जग भरे।
तिन चरण धूरि मो भूरि सिर जे जे हरिमाया तरे।।१२।।

निमि अरु नव योगेश्वरा पादत्राण की हौं शरण।।
कवि हरि करभाजन भक्ति रतनाकर भारी।
अन्तरिक्ष अरु चमस अनन्यता पधति उधारी।।
प्रबुध प्रेम की राशि भूरिदा आबिर होता।
पिप्पल द्रुमिल प्रसिद्ध भवाब्धि पार के पोता।।
जयन्ती नन्दन जगत् के त्रिविध ताप आमय हरण।
निमि अरु नव योगेश्वरा पादत्राण की हौं शरण।।१३।।

पद पराग करुणा करौ जे नियन्ता नवधा भगति के।।
श्रवण परीक्षित सुमति व्यास सावक सुकीरतन।
सुठि सुमिरन प्रह्लाद पृथु पूजा कमला चरनन मन।।
वन्दन सुफलकसुवन दास्य दीपत्ति कपीश्वर।
सख्यत्वे पारत्थ समर्पन आतम बलिधर।।
उपजीवी इन नाम के एते त्राता अगति के।
पद पराग करुणा करौ जे नियन्ता नवधा भगति के।।१४।।

श्रीभगवद् प्रसादनिष्ठ भक्त

हरि प्रसाद रस स्वाद के भक्त इते परमान।।
शंकर शुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना।
विष्वक्सेन प्रह्लाद बलिर भीषम जग जाना।।
अर्जुन ध्रुव अम्बरीष विभीषण महिमा भारी।
अनुरागी अक्रूर सदा उद्धव अधिकारी।।
भगवन्त भुक्त अवशिष्ट की कीरति कहत सुजान।
हरि प्रसाद रस स्वाद के भक्त इते परमान।।१५।।

ध्याननिष्ठ भक्त

ध्यान चतुर्भुज चित धर्यो तिन्हैं शरण हौं अनुसरौं।।
अगस्त्य पुलस्त्य पुलह च्यवन वशिष्ठ सौभरि रिषि।
कर्दम अत्रि रिचीक गर्ग गौतम सुव्यास शिषि।।
लोमश भृगु दालभ्य अंगिरा श्रृंगि प्रकासी।
माण्डव्य विश्वामित्र दुर्वासा सहस अठासी।।
जाबालि यमदग्नि मायादर्श कश्यप परवत पराशर पद रज धरौं।
ध्यान चतुर्भुज चित धर्यो तिन्हैं शरण हौं अनुसरौं।।१६।।

अठारह महापुराण

साधन साध्य सत्रह पुरान फलरूपी श्रीभागवत।।
ब्रह्म विष्णु शिव लिंग पद्म स्कन्द विस्तारा।
वामन मीन वाराह अग्नि कूरम ऊदारा।।
गरुड़ नारदी भविष्य ब्रह्मवैवर्त्त श्रवण शुचि।
मार्कण्डेय ब्रह्माण्ड कथा नाना उपजै रुचि।।
परमधर्म श्रीमुख कथित चतुःश्लोकी निगम सत।
साधन साध्य सत्रह पुरान फलरूपी श्रीभागवत।।१७।।

अठारह स्मृतियाँ

दश आठ स्मृति जिन उच्चरी तिन पद सरसिज भाल मो।।
मनुस्मृति अत्रेय वैष्णवी हारीतक यामी।
याज्ञवल्क्य अंगिरा शनैश्चर साम्वर्तक नामी।।
कात्यायनि सांखल्य गौतमी वासिष्ठी दाखी।
सुरगुरु आतातापि पराशर क्रतु मुनि भाखी।।
आशा पास उदारधी परलोक लोक साधन सो।
दश आठ स्मृति जिन उच्चरी तिन पद सरसिज भाल मो।।१८।।

श्रीराम सचिव

पावैं भक्ति अनपायिनी जे राम सचिव सुमिरन करैं।
धृष्टी विजय जयन्त नीति पर शुचि सुविनीता।
राष्ट्र विवर्धन निपुण सुराष्टर परम पुनीता।।
अशोक सदा आनन्द धर्मपालक तत्ववेत्ता।
मन्त्रीवर्य सुमन्त्र चतुर्जुग मन्त्री जेता।।
अनायास रघुपति प्रसन्न भवसागर दुरस्त तरैं।
पावैं भक्ति अनपायिनी जे राम सचिव सुमिरन करैं।।१९।।

श्रीराम सहचरवर्ग

शुभदृष्टि वृष्टि मो पर करौं जे सहचर रघुवीर के।।
दिनकर सुत हरिराज बालिवछ केसरि औरस।
दधिमुख द्विविद मयन्द रिच्छपति सम को पौरस।।
उल्का सुभट सुषेन दरीमुख कुमुद नील नल।
सरभ रु गवय गवाच्छ पनस गन्धमादन अति बल।।
पद्म अठारह यूथपाल रामकाज भट भीर के।
शुभदृष्टि वृष्टि मो पर करौ जे सहचर रघुवीर के।।२०।।

नवों नन्दजी

ब्रज बड़े गोप पर्जन्य के सुत नीके नव नन्द।।
धरानन्द ध्रुवनन्द तृतिय उपनन्द सुनागर।
चतुर्थ तहाँ अभिनन्द नन्द सुखसिन्धु उजागर।।
सुठि सुनन्द पशुपाल निर्मल निश्चय अभिनन्दन।
कर्मा धर्मानन्द अनुज वल्लभ जग वन्दन।।
आस पास वा बगर के जहँ विहरत पशुप सुछन्द।
ब्रज बड़े गोप पर्जन्य के सुत नीके नव नन्द।।२१।।

समस्त ब्रजवासीगण

बाल वृद्ध नर नारि गोप हौं अर्थी उन पाद रज।।
नन्द गोप उपनन्द ध्रुव धरानन्द महरि जसोदा।
कीरतिदा वृषभानु कुँअरि सहचरि मन मोदा।।
मधुमंगल सुबल सुबाहु भोज अर्जुन श्रीदामा।
मण्डल ग्वाल अनेक स्याम संगी बहुनामा।।
घोष निवासिन की कृपा सुर नर बांछत आदि अज।
बाल वृद्ध नर नारि गोप हौं अर्थी उन पाद रज।।२२।।

श्रीकृष्णजी के षोडश सखा

ब्रजराज सुवन संग सदन बन अनुग सदा तत्पर रहैं।।
रक्तक पत्रक और पत्रि सबही मन भावैं।
मधुकण्ठौ मधुवर्त्त रसाल विशाल सुहावैं।।
प्रेमकन्द मकरन्द सदा आनन्द चन्द्रहासा।
पयद बकुल रसदान सारदा बुद्धि प्रकासा।।
सेवा समय विचारिकै चारु चतुर चित की लहैं।
ब्रजराज सुवन संग सदन बन अनुग सदा तत्पर रहैं।।२३।।

सप्तद्वीप एवं वहाँ के भक्त

सप्तद्वीप में दास जे ते मेरे सिरताज।
जम्बू और पलच्छ सालमलि बहुत राजरिषि।
कुश पवित्र पुनि क्रौंच कौन महिमा जानै लिषि।।
साक विपुल विस्तार प्रसिध नामी अति पुहकर।
पर्वत लोकालोक ओक टापू कंचनधर।।
हरिभृत्य बसत जे जे जहाँ तिनसौं नितप्रति काज।
सप्तद्वीप में दास जे ते मेरे सिरताज।।२४।।

जम्बूद्वीप एवं वहाँ के भक्त

मध्यदीप नवखण्ड में भक्त जिते मम भूप।।
इलावर्त्त अधीस संकर्षन अनुग सदाशिव।
रमनक मछ मनु दास हिरण्य कूरम अर्जम इव।।
कुरु वाराह भूभृत्य वर्ष हरि सिंह प्रह्लादा।
किंपुरुष राम कपि भरत नरायन बीना नादा।।
भद्राश्वग्रीवहय भद्रस्रव केतु काम कमला अनूप।
मध्यदीप नवखण्ड में भक्त जिते मम भूप।।२५।।

श्वेतद्वीप एवं वहाँ के भक्त

श्वेतदीप में दास जे श्रवण सुनौ तिनकी कथा।।
श्रीनारायण वदन निरन्तर ताही देखैं।
पलक परै जो बीच कोटि जमजातन लेखैं।।
तिनके दरशन काज गये तहँ वीणाधारी।
श्याम दई कर सैन उलटि अब नहिं अधिकारी।।
नारायण आख्यान दृढ़ तहँ प्रसंग नाहिन तथा।
श्वेतदीप में दास जे श्रवण सुनौ तिनकी कथा।।२६।।

अष्टकुल नाग भक्त

उरग अष्टकुल द्वारपाल सावधान हरिधाम थिति।।
इलापत्र मुख अनन्त, अनन्त कीरति बिसतारत।
पद्म शंकु पन प्रगट ध्यान उर ते नहिं टारत।।
अश्वकमल वासुकी अजित आज्ञा अनुवरती।
करकोटक तक्षक सुभट सेवा सिर धरती।।
आगमोक्त शिवसंहिता "अगर" एकरस भजन रति।
उरग अष्टकुल द्वारपाल सावधान हरिधाम थिति।।२७।।

।। इति पूर्वार्द्ध।।

अथ श्रीभक्तमाल उत्तरार्द्ध

चतुःसम्प्रदायाचार्य

चौबीस प्रथम हरि वपु धरे त्यौं चतुर्व्यूह कलियुग प्रगट।।
श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु।
विष्णुस्वामि बोहित्थ सिन्धु संसार पार करु।।
मध्वाचारज मेघ भक्ति सर ऊसर भरिया।
निम्बादित्य आदित्य कुहर अज्ञान जु हरिया।।
जनम करम भागवत धरम सम्प्रदाय थापीं अघट।
चौबीस प्रथम हरि वपु धरे त्यौं चतुर्व्यूह कलियुग प्रगट।।२८।।

रमा पद्धति रामानुज विष्णुस्वामि त्रिपुरारि।
निम्बादित्य सनकादिका मधुकर गुरु मुखचारि।।२९।।

श्रीसम्प्रदाय

सम्प्रदाय शिरोमणि सिन्धुजा रच्यौ भक्ति वित्तान।।
विष्वक्सेन मुनिवर्य सु पुनि सठकोप पुनीता।
वोपदेव भागवत लुप्त उधर्‌यो नवनीता।।
मंगल मुनि श्रीनाथ पुण्डरीकाक्ष परम जस।
राममिश्र रसरासि प्रगट परताप परांकुश।।
यामुन मुनि रामानुज तिमिर हरन उदय भान।
सम्प्रदाय शिरोमणि सिन्धुजा रच्यौ भक्ति वित्तान।।३०।।

स्वामी श्रीरामानुजाचार्यजी

सहस्र आस्य उपदेश करि जगत् उधारन जतन कियो।।
गोपुर ह्वै आरूढ़ उच्चस्वर मन्त्र उचार्‌यो।
सूते नर परे जागि बहत्तरि श्रवणनि धार्‌यो।।
तितनेई गुरुदेव पधति भईं न्यारी न्यारी।
कुरुतारक शिष्य प्रथम भक्ति वपु मंगलकारी।।
कृपणपाल करुणा समुद्र रामानुज सम नहिं बियो।
सहस्र आस्य उपदेश करि जगत् उधारन जतन कियो।।३१।।

चार दिग्गज महन्त

चतुर महन्त दिग्गज चतुर भक्तिभूमि दाबे रहैं।।
श्रुतिप्रज्ञा श्रुतिदेव ऋषभ पुहकर इभ ऐसे।
श्रुतिधामा श्रुतिउदधि पराजित वामन जैसे।।
श्रीरामानुज गुरु बन्धु विदित जग मंगलकारी।
शिवसंहिता प्रणीत ज्ञान सनकादिक सारी।।
इन्दिरा पद्धति उदारधी सभा साखि सारंग कहैं।
चतुर महन्त दिग्गज चतुर भक्तिभूमि दाबे रहैं।।३२।।

श्रीलालाचार्यजी

आचारज जामात की कथा सुनत हरि होइ रति।।
कोउ मालाधारी मृतक बह्यो सरिता में आयो।
दाह कृत्य ज्यौं बन्धु न्यौति सब कुटुम्ब बुलायो।।
नाक सकोचहिं विप्र तबहिं हरिपुर जन आये।
जेंवत देखे सबनि जात काहू नहिं पाये।।
लालाचारज लक्षधा प्रचुर भई महिमा जगति।
आचारज जामात की कथा सुनत हरि होइ रति।।३३।।

श्रीपादपद्माचार्यजी (गुरु और शिष्य)

श्रीमारग उपदेश कृत श्रवण सुनौ आख्यान शुचि।।
गुरु गमन कियो परदेश शिष्य सुरधुनी दृढ़ाई।
इक मंजन इक पान हृदय वन्दना कराई।।
गुरु गंगा में प्रविशि शिष्य को वेगि बुलायौ।
विष्णुपदी भय मानि कमल पत्रन पर धायौ।।
पादपद्म ता दिन प्रगट सब प्रसन्न मन परम रुचि।
श्रीमारग उपदेश कृत श्रवण सुनौ आख्यान शुचि।।३४।।

श्रीसम्प्रदाय

श्रीरामानुज पद्धति प्रताप अवनि अमृत ह्वै अनुसर्यौ।।
देवाचारज द्वितीय महामहिमा हरियानन्द।
तस्य राघवानन्द भये भक्तन को मानद।।
पत्रावलम्ब पृथिवी करी व काशी स्थाई।
चारि वरन आश्रम सबही को भक्ति दृढ़ाई।।
तिनके रामानन्द प्रगट विश्व मंगल जिन्ह वपु धर्यौ।
श्रीरामानुज पद्धति प्रताप अवनि अमृत ह्वै अनुसर्यौ।।३५।।

स्वामी श्रीरामानन्दाचार्यजी

श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यौं दुतिय सेतु जग तरन कियो।।
अनन्तानन्द कबीर सुखा सुरसुरा पद्मावति नरहरि।
पीपा भावानन्द रैदास धना सेन सुरसुर की घरहरि।।
औरौ शिष्य प्रशिष्य एक ते एक उजागर।
जग मंगल आधार भक्ति दशधा के आगर।।
बहुत काल वपु धारिकै प्रणत जनन कौं पार दियो।
श्रीरामानन्द रघुनाथ ज्यौं दुतिय सेतु जग तरन कियो।।३६।।

श्रीअनन्तानन्दजी

श्रीअनन्तानन्द पद परसिकै लोकपाल से ते भये।।
योगानन्द गयेश करमचन्द अल्ह पैहारी।
सारी रामदास श्रीरंग अवधि गुण महिमा भारी।।
तिनके नरहरि उदित मुदित मेहा मंगलतन।
रघुवर यदुवर गाइ विमल कीरति संच्यो धन।।
हरिभक्ति सिन्धुबेला रचे पानि पद्मजा सिर दये।
श्रीअनन्तानन्द पद परसिकै लोकपाल से ते भये।।३७।।

पयहारी श्रीकृष्णदासजी

निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास अन्न परिहरि पय पान कियो।।
जाके सिर कर धर्‌यो तासु कर तर नहिं आँड्यो।
अर्प्यो पद निर्वान शोक निर्भय करि छाँड्यो।।
तेजपुंज बल भजन महामुनि ऊरधरेता।
सेवत चरण सरोज राय राना भुविजेता।।
दाहिमावंश दिनकर उदय सन्त कमल हिय सुख दियो।
निर्वेद अवधि कलि कृष्णदास अन्न परिहरि पय पान कियो।।३८।।

पयहारीजी के शिष्यगण

पयहारी परसाद तें शिष्य सबै भये पारकर।।
कील्ह अगर केवल चरण व्रतहठी नारायन।
सूरज पुरुषां पृथु तिपुर हरिभक्ति परायन।।
पद्मनाभ गोपाल टेक टीला गदाधारी।
देवा हेम कल्यान गंगा गंगासम नारी।।
विष्णुदास कन्हर रंगा चाँदन सबही गोविन्द पर।
पयहारी परसाद तें शिष्य सबै भये पारकर।।३६।।

श्रीकील्हदेवजी

गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं त्यौं कील्ह करन नहिं कालवश।।
राम चरण चिन्तवनि रहति निशिदिन लौं लागी।
सर्वभूत सिर नमित सूर भजनानन्द भागी।।
सांख्ययोग मति सुदृढ़ कियो अनुभव हस्तामल।
ब्रह्मरन्ध्र करि गौन भये हरि तन करनी बल।।
सुमेरदेव सुत जग विदित भुवि विस्तार्यो विमल यश।
गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं त्यौं कील्ह करन नहिं कालवश।।४०।।

श्रीअग्रदासजी

(श्री) अग्रदास हरिभजन बिन काल वृथा नहिं बित्तयो।।
सदाचार ज्यौं सन्त प्राप्त जैसें करि आये।
सेवा सुमिरण सावधान चरण राघव चित लाये।।
प्रसिध बाग सौं प्रीति सुहथ कृत करत निरन्तर।
रसना निर्मल नाम मनहुँ वर्षत धाराधर।।
कृष्णदास(कृपाकरि)भक्तिदत्त मन वच क्रम करि अटल दयो।
(श्री) अग्रदास हरिभजन बिन काल वृथा नहिं बित्तयो।।४१।।

श्रीशंकराचार्यजी

कलियुग धर्मपालक प्रगट आचारज शंकर सुभट।।
उत्शृंखल अज्ञान जिते अनईश्वरवादी।
बौद्ध कुतर्की जैन और पाखण्डहिं आदी।।
विमुखनि को दियो दण्ड ऐंचि सन्मारग आने।
सदाचार की सींव विश्व कीरतिहिं बखाने।।
ईश्वरांश अवतार महि मरजादा माँडी अघट।
कलियुग धर्मपालक प्रगट आचारज शंकर सुभट।।४२।।

श्रीनामदेवजी

नामदेव प्रतिज्ञा निर्वही ज्यौं त्रेता नरहरिदास की।।
बालदशा बीठल्य पानि जाके पै पीयौ।
मृतक गऊ जिवाय परचौ असुरन कौं दीयौ।।
सेज सलिल तें काढ़ि पहिल जैसी ही होती।
देवल उलट्यो देखि सकुचि रहे सबही सोती।।
पण्ढरनाथ कृत अनुग ज्यौं छानि सुकर छाई घास की।
नामदेव प्रतिज्ञा निर्वही ज्यौं त्रेता नरहरिदास की।।४३।।

श्रीजयदेवजी

जयदेव कवि नृप चक्कवै खंडमंडलेश्वर आन कवि।।
प्रचुर भयो तिहुँलोक गीतगोविन्द उजागर।
कोक काव्य नवरस सरस सिंगार को आगर।।
अष्टपदी अभ्यास करै तेहिं बुद्धि बढ़ावैं।
(श्री) राधारमन प्रसन्न सुनन निश्चय तहँ आवैं।।
सन्त सरोरुहखण्ड कौं पद्मापति सुखजनक रवि।
जयदेव कवि नृप चक्कवै खंडमंडलेश्वर आन कवि।।४४।।

श्रीश्रीधराचार्यजी

श्रीधर श्रीभागौत में परमधरम निरनै कियौ।।
तीन काण्ड एकत्व सानि कोउ अज्ञ बखानत।
कर्मठ ज्ञानी ऐंचि अर्थ कौ अनरथ बानत।।
परमहंस संहिता विदित टीका बिसतार्‌यौ।
षट्शास्त्रनि अविरुद्ध वेद संमतहिं विचार्‌यौ।।
परमानन्द प्रसाद तें माधौ सुकर सुधारि दियौ।
श्रीधर श्रीभागौत में परम धरम निरनै कियौ।।४५।।

श्रीविल्वमंगलजी

कृष्ण कृपा को पर प्रगट विल्वमंगल मंगलस्वरूप।।
करणामृत सुकवित्त उक्ति अनुछिष्ट उचारी।
रसिकजनन जीवन हृदय जै हारावलि धारी।।
हरि पकरायो हाथ बहुरि तहँ लियो छुड़ाई।
कहा भयो कर छुटे बदौं जो हिय तें जाई।।
चिन्तामणि सँग पायकै ब्रजबधू केलि बरनी अनूप।
कृष्ण कृपा को पर प्रगट विल्वमंगल मंगलस्वरूप।।४६।।

श्रीविष्णुपुरीजी

कलि जीव जंजाली कारनै विष्णुपुरी बड़ि निधि सँची।।
भगवत् धर्म उतंग आन धर्म आन न देखा।
पीतर पटतर विगत निकष ज्यौं कुन्दन रेखा।
कृष्ण कृपा कहि बेलि फलित सत्संग दिखायो।
कोटि ग्रन्थ को अर्थ तेरह विरचन में गायो।।
महा समुद्र भागौत तें भक्तिरतन राजी रची।
कलि जीव जंञ्जाली कारनै विष्णुपुरी बड़ि निधि सँची।।४७।।

श्रीज्ञानदेवजी

विष्णुस्वामि सम्प्रदाय दृढ़ ज्ञानदेव गम्भीर मति।।
नाम तिलोचन शिष्य सूर शशि सदृश उजागर।
गिरा गंग उनहारि काव्य रचना प्रेमाकर।।
आचारज हरिदास अतुल बल आनँददायन।
तेहिं मारग वल्लभ विदित पृथु पधति परायन।।
नवधा प्रधान सेवा सुदृढ़ मन वच क्रम हरि चरन रति।
विष्णुस्वामि सम्प्रदाय दृढ़ ज्ञानदेव गम्भीर मति।।४८।।

श्रीकुलशेखरजी

सन्त साखि जानैं सबै प्रगट प्रेम कलियुग प्रधान।।
भक्तदास इक भूप श्रवन सीताहर कीनौं।
मार–मारकर खड्ग बाजि सागर में दीनौं।।
नरसिंह कौ अनुकरण होइ हिरनाकुश मार्यो।
वहै भयौ दसरत्थ राम बिछुरत तन डार्यो।।
कृष्ण दाम बाँधे सुने तिहिं छन दीनो प्रान।
सन्त साखि जानैं सबै प्रगट प्रेम कलियुग प्रधान।।४९।।

प्रसाद अवज्ञा जानिकैं पाणि तज्यौ एकै नृपति।।
हौं कहा कहौं बनाइ बात सबही जग जानैं।
कर तैं दौना भयो स्याम सौरभ मन मानैं।।
छपनभोग तैं पहिल खीच करमा कौ भावैं।
सिलपिल्ले के कहत कुँअरि पै हरि चलि आवैं।।
भक्तन हित सुत विष दियौ भूप नारि प्रभु राखि पति।
प्रसाद अवज्ञा जानिकैं पाणि तज्यौ एक नृपति।।५०।।

आशै अगाध दुहुँ भक्त को हरितोषन अतिशै कियौ।।
रंगनाथ को सदन करन बहु बुद्धि विचारी।
कपट धर्म रचि जैन द्रव्यहित देह बिसारी।।
हंस पकरनैं काज बधिक बानौं धरि आये।
तिलक दाम की सकुच जानि तिन आप बँधाये।।
सुत बध हरिजन देखिकै दै कन्या आदर दियौ।
आशै अगाध दुहुँ भक्त को हरितोषन अतिशै कियौ।।५१।।

चारौ युग चतुर्भुज सदा भक्त गिरा साँची करन।।
दारुमई तरवार सारमय रची भुवन की।
देवा हित सितकेश प्रतिज्ञा राखी जन की।।
कमधुज के कपि चारु चिता पर काष्ठ जु ल्याये।
जैमल के जुधि माँहि अश्व चढ़ि आपुन धाये।।
घृत सहित भैंस चौगुनी श्रीधर संग सायक धरन।
चारौ युग चतुर्भुज सदा भक्त गिरा साँची करन।।५२।।

भक्तनि संग भगवान् नित ज्यौं गऊबच्छ गोहन फिरैं।।
निहकिंचन इक दास तासु के हरिजन आये।
विदित बटोही रूप भये हरि आपु लुटाये।।
साषि देन कौ स्याम खुरदहा प्रभुहिं पधारे।
रामदास के सदन राय रनछोर सिधारे।।
आयुध छत तन अनुग के बलि बन्धन अपु वपु धरैं।
भक्तनि संग भगवान् नित ज्यौं गऊबच्छ गोहन फिरैं।।५३।।

बच्छ हरन पाछैं विदित सुनौ सन्त अचरज भयो।।
जसू स्वामि के वृषभ चोरि ब्रजवासी ल्याये।
तैसोई दिये स्याम वरष दिन खेत जुताये।।
नामा ज्यौं नँददास मुई इक बच्छि जिवाई।
अंब अल्ड कौं नये प्रसिद्ध जग गाथा गाई।।
बारमुखी के मुकुट कौं श्रीरंगनाथ को सिर नयो।
बच्छ हरन पाछैं विदित सुनौ सन्त अचरज भयो।।५४।।

ब्राह्मण–दम्पति

और युगन तें कमलनयन कलियुग बहुत कृपा करी।।
बीच दिये रघुनाथ भक्त संग ठगिया लागे।
निर्जन वन में जाय दुष्ट कर्म कियो अभागे।।
बीच दियो सो कहाँ ? राम ! कहि नारि पुकारी।
आये सारंगपाणि शोकसागर ते तारी।।
दुष्ट किये निर्जीव सब दास प्राण संज्ञा धरी।
और युगन तें कमलनयन कलियुग बहुत कृपा करी।।५५।।

भेषनिष्ठ एक राजा

एक भूप भागौत की कथा सुनत हरि होय रति।।
तिलक दाम धरि कोइ ताहि गुरु गोविन्द जानै।
षट्दर्शनी अभाव सर्वथा घट करि मानै।।
भाँड़ भक्त कौ भेष हाँसि हित भँड़कुट ल्याये।
नरपति कै दृढ़ नेम ताहि ये पाँव धुवाये।।
भाँड़ भेष गाढ़ो गह्यो दरस परस उपजी भगति।
एक भूप भागौत की कथा सुनत हरि होय रति।।५६।।

अन्तर्निष्ठ राजा

अन्तरनिष्ठ नृपाल इक परम धरम नाहिन धुजी।।
हरि सुमिरण हरि ध्यान आन काहू न जनावै।
अलग न इहि विधि रहै अँगना मरम न पावै।।
निद्रावश सो भूप वदन ते नाम उचार्‌यो।
रानी पति पर रीझि बहुत वसु ता पर वार्‌यो।।
ऋषिराज सोचि कह्यो नारि सौं आज भक्ति मेरी कुजी।
अन्तरनिष्ठ नृपाल इक परम धरम नाहिन धुजी।।५७।।

श्रीगुरुनिष्ठ भक्त

गुरु गदित वचन शिष सत्य अति दृढ़ प्रतीति गाढ़ो गह्यो।।
अनुचर आज्ञा माँगि कह्यो कारज कौं जैहौं।
आचारज इक बात तोहिं आये तें कहिहौं।।
स्वामी रह्यो समाय दास दरसन कौं आयो।
गुरु की गिरा विश्वास फेरि शव घर में ल्यायो।।
शिषपन साँचो करन कौं विभु सबै सुनत सोई कह्यो।
गुरु गदित वचन शिष सत्य अति दृढ़ प्रतीति गाढ़ो गह्यो।।५८।।

श्रीरैदासजी

सन्देह ग्रन्थि खण्डन निपुन वानी विमल रैदास की।।
सदाचार श्रुति शास्त्र वचन अविरुद्ध उचार्‌यो।
नीर खीर विवरन परम हंसनि उर धार्‌यो।।
भगवत् कृपा प्रसाद परमगति इहि तन पाई।
राजसिंहासन बैठि ज्ञाति परतीति दिखाई।।
वर्णाश्रम अभिमान तजि पद रज वन्दहिं जासु की।
सन्देह ग्रन्थि खण्डन निपुन वानी विमल रैदास की।।५९।।

श्रीकबीरजी

कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट्दरसनी।।
भक्ति विमुख जो धर्म सो अधरम करि गायो।
जोग जग्य व्रत दान भजन बिनु तुच्छ दिखायो।।
हिन्दू तुरक प्रमान रमैनी शबदी साखी।
पक्षपात नहिं वचन सबही के हित की भाखी।।
आरूढ़ दसा ह्वै जगत् पर मुखदेखी नाहिन भनी।
कबीर कानि राखी नहीं वर्णाश्रम षट्दरसनी।।६०।।

श्रीपीपाजी की कथा

पीपा प्रताप जग वासना नाहर कौं उपदेश दियौ।।
प्रथम भवानी भक्त मुक्ति माँगन कौं धायौ।
सत्य कह्यो तिहिं शक्ति सुदृढ़ हरिशरण बतायौ।।
श्रीरामानन्द पद पाइ भयौ अति भक्ति की सीवाँ।
गुण असंख्य निर्मोल सन्त धरि राखत ग्रीवाँ।।
परसि प्रणाली सरस भई सकल विश्व मंगल कियौ।
पीपा प्रताप जग वासना नाहर कौं उपदेश दियौ।।६१।।

श्रीधनाजी

धन्य धना के भजन को बिनहिं बीज अंकुर भयौ।।
घर आये हरिदास तिनहिं गोधूम खवाये।
तात मात डर खेत थोथ लांगूल चलाये।।
आस–पास कृषिकार खेत की करत बड़ाई।
भक्त भजे की रीति प्रगट परतीति जु पाई।।
अचरज मानत जगत् में कहुँ निपुज्यौ कहुँ वै बयौ।
धन्य धना के भजन को बिनहिं बीज अंकुर भयौ।।६२।।

श्रीसेनजी

विदित बात जग जानियै हरि भये सहायक सेन के।।
प्रभू दास के काज रूप नापित कौ कीनौ।
छिप्र छुड़हरी गही पानि दर्पन तँह लीनौ।।
तादृश ह्वै तिहिं काल भूप के तेल लगायौ।
उलटि राव भयो शिष्य प्रगट परचौ जब पायौ।।
स्याम रहत सनमुख सदा ज्यौं बच्छा हित धेन के।
विदित बात जग जानियै हरि भये सहायक सेन के।।६३।।

श्रीसुखानन्दजी

भक्ति दान भय हरन भुज सुखानन्द पारस परस।।
सुखसागर की छाप राग गौरी रुचि न्यारी।
पद रचना गुरु मन्त्र मनौं आगम अनुहारी।।
निसिदिन प्रेम प्रवाह द्रवत भूधर ज्यौं निर्झर।
हरिगुन कथा अगाध भाल राजत लीला भर।।
संत कंज पोषन विमल अति पीयूष सरसी सरस।
भक्ति दान भय हरन भुज सुखानन्द पारस परस।।६४।।

श्रीसुरसुरानन्दजी

महिमा महा प्रसाद की सुरसुरानन्द साँची करी।।
एक समै अध्वा चलत बरा वाक् छल पाये।
देखा–देखी शिष्य तिनहुँ पाछैं ते खाये।।
तिन पर स्वामी खिजे वमन करि बिन विश्वासी।
तिन तैसें परतच्छ भूमि पर कीनी रासी।।
सुरसुरी सुवर पुनि उदगले पुहुप रेनु तुलसी हरी।
महिमा महा प्रसाद की सुरसुरानन्द साँची करी।।६५।।

श्रीसुरसुरीजी

महासती सत ऊपमा त्यौं सत्त सुरसुरी कौ रह्यौ।।
अति उदार दम्पति त्यागि गृह वन को गमने।
अचरज भयो तँह एक सन्त सुनि जिन हो बिमने।।
बैठे हुते एकान्त आय असुरनि दुख दीयौ।
सुमिरे सारँगपाणि रूप नरहरि कौ कीयौ।।
सुरसुरानन्द की घरनि कौ सत राख्यौ नरसिंह जह्यौ।
महासती सत ऊपमा त्यौं सत्त सुरसुरी कौ रह्यौ।।६६।।

श्रीनरहरियानन्दजी

निपट नरहरियानन्द कौ करदाता दुर्गा भई।।
घर झर लकरी नाहिं शक्ति कौ सदन उदारैं।
शक्ति भक्त सौं बोलि दिनहिं प्रति बरही डारैं।।
लगी परोसी हौंस भवानी भ्वैंसो मारैं।
बदले की बेगारि मूँड़ वाके सिर डारैं।।
भरत प्रसंग ज्यौं कालिका लड़ू देखि तन में तई।
निपट नरहरियानन्द कौ करदाता दुर्गा भई।।६७।।

श्रीपद्मनाभजी

कबीर कृपा तें परमतत्त्व पद्मनाभ परचौ लह्यौ।।
नाम महानिधि मन्त्र नाम ही सेवा पूजा।
जप तप तीरथ नाम, नाम बिन और न दूजा।।
नाम प्रीति नाम बैर नाम कहि नामी बोलै।
नाम अजामिल साखि नाम बन्धन तें खोलै।।
नाम अधिक रघुनाथ तें राम निकट हनुमत् कह्यौ।
कबीर कृपा तैं परमतत्त्व पद्मनाभ परचौ लह्यौ।।६८।।

श्रीतत्वाजी, श्रीजीवाजी

तत्वा जीवा दक्षिण देश वंशोद्धर राजत विदित ।।
भक्ति सुधा जल समुद्र भये बेलावलि गाढ़ी।
पूरबजा ज्यौं रीति प्रीति उत्तरोत्तर बाढ़ी।।
रघुकुल सदृश सुभाव श्रेष्ठ गुण सदा धर्मरत।
सूर धीर ऊदार दया पर दक्ष अनन्य व्रत।।
पद्मखण्ड पद्मा पद्धति प्रफुलित कर सविता उदित।
तत्वा जीवा दक्षिण देश वंशोद्धर राजत विदित।।६६।।

श्रीमाधवदासजी

बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै जग को हित माधौ कियौ।।
पहिले वेद विभाग कथित पुरान अष्टादस।
भारतादि भागौत मथित उद्धार्‌यौ हरि जस।।
अब सोधे सब ग्रन्थ अर्थ भाषा विस्तार्‌यौ।
लीला जै–जै जैति गाय भवपार उतार्‌यौ।।
जगन्नाथ इष्ट वैराग्य सींव करुणा रस भीज्यो हियौ।
बिनै व्यास मनो प्रगट ह्वै जग को हित माधौ कियौ।।७०।।

श्रीरघुनाथदास गोसाँईजी

(श्री) रघुनाथ गुसाँई गरुड़ ज्यौं सिंहपौरि ठाढ़े रहैं।।
सीत लगत सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी।
शौच गये हरि संग कृत्य सेवक की कीनी।।
जगन्नाथ पद प्रीति निरन्तर करत खवासी।
भगवत् धर्म प्रधान प्रसन्न नीलाचल वासी।।
उत्कल देश उड़ीसा नगर बैनतेय सब कोउ कहैं।
(श्री) रघुनाथ गुसाँई गरुड़ ज्यौं सिंहपौरि ठाढ़े रहैं।।७१।।

श्रीनित्यानन्दजी, श्रीकृष्णचैतन्यजी

नित्यानन्द (कृष्ण) चैतन्य की भक्ति दशों दिशि विस्तरी।।
गौड़देश पाखण्ड मेटि कियौ भजन परायन।
करुणासिन्धु कृतज्ञ भये अगतिन गति दायन।।
दसधारस आक्रान्ति महत् जन चरण उपासे।
नाम लेत निहपाप दुरित तिहिं नर के नासे।।
अवतार विदित पूरब मही उभै महन्त देही धरी।
नित्यानन्द (कृष्ण) चैतन्य की भक्ति दशों दिशि विस्तरी।।७२।।

श्रीसूरदासजी

सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।।
उक्ति चोज अनुप्रास वरन अस्थिति अति भारी।
वचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी।।
प्रतिबिम्बित दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी।
जनम करम गुन रूप सबै रसना परकासी।।
विमल बुद्धि गुन और की जो यह गुन श्रवननि धरै।
सूर कवित सुनि कौन कवि जो नहिं सिर चालन करै।।७३।।

श्रीपरमानन्ददासजी

ब्रजबधू रीति कलियुग विषैं परमानन्द भयौ प्रेमकेत।।
पौगण्ड बाल कैशोर गोप लीला सब गाई।
अचरज कहा यह बात हुतौ पहिलौ जु सखाई।।
नैंननि नीर प्रवाह रहत रोमांच रैन दिन।
गद्गद गिरा उदार स्याम शोभा भीज्यौ तन।।
सारंग छाप ताकी भई श्रवण सुनत आवेश देत।
ब्रजबधू रीति कलियुग विषैं परमानन्द भयौ प्रेमकेत।।७४।।

श्रीकेशवभट्टजी काश्मीरी

केशवभट नरमुकुटमणि जिनकी प्रभुता विस्तरी।।
काश्मीरि की छाप पाप तापन जग मण्डन।
दृढ़ हरिभक्ति कुठार आन धर्म बिटप विहण्डन।।
मथुरा मध्य मलेच्छ वाद करि बरबट जीते।
काजी अजित अनेक देखि परचै भय भीते।।
विदित बात संसार सब सन्त साखि नाहिन दुरी।
केशवभट नरमुकुटमणि जिनकी प्रभुता विस्तरी।।७५।।

श्रीश्रीभट्टजी

श्रीभट्ट सुभट प्रगट्यौ अघट रस रसिकन मनमोद घन।।
मधुर भाव सम्मिलित ललित लीला सु बलित छबि।
निरखत हरखत हृदै प्रेम बरषत सु कलित कवि।।
भव निस्तारन हेतु देत दृढ़ भक्ति सबनि नित।
जासु सुजस ससि ऊदै हरत अति तम भ्रम श्रम चित।।
आनन्दकन्द श्रीनन्द सुत श्रीवृषभानु सुता भजन।
श्रीभट्ट सुभट प्रगट्यौ अघट रस रसिकन मनमोद घन।।७६।।

श्रीहरिव्यासदेवजी

हरिव्यास तेज हरिभजन बल देवी को दीक्षा दई।।
खेचर नर की शिष्य निपट अचरज यह आवै।
विदित बात संसार सन्त मुख कीरति गावै।।
वैरागिन के वृन्द रहत सँग स्याम सनेही।
ज्यौं जोगेश्वर मध्य मनो सोभित वैदेही।।
श्रीभट्ट चरण रज परस तैं सकल सृष्टि जाकौं नई।
हरिव्यास तेज हरिभजन बल देवी को दीक्षा दई।।७७।।

श्रीदिवाकरजी

अज्ञान ध्वांत अन्तहिं करन दुतिय दिवाकर अवतर्यौ।
उपदेशे नृपसिंह रहत नित आज्ञाकारी
पक्व वृक्ष ज्यौं नाय सन्त पोषक उपकारी।
वानी भोलाराम सुहृद सबहिन पर छाया
भक्त चरणरज जाँचि विशद राघौ गुण गाया।
करमचन्द कश्यप सदन बहुरि आय मनो वपु धर्यौ
अज्ञान ध्वांत अन्तहिं करन दुतिय दिवाकर अवतर्यौ।।७८।

श्रीविट्ठलनाथ गोसाँईजी

विट्ठलनाथ ब्रजराज ज्यौं लाल लड़ायकै सुख लियौ।।
राग भोग नित विविध रहत परिचर्या ततपर।
सय्या भूषन वसन रचित रचना अपने कर।।
वह गोकुल वह नन्दसदन दीच्छित को सोहै।
प्रगट विभौ जहाँ घोष देखि सुरपति मन मोहै।।
वल्लभ सुत बल भजन के कलियुग में द्वापर कियौ।
विट्ठलनाथ ब्रजराज ज्यौं लाल लड़ायकै सुख लियौ।।७९।।

श्रीविट्ठलनाथजी के सुत

(श्री) विट्ठलेश सुत सुहृद् श्रीगोवरधनधर ध्याइयै।।
श्रीगिरिधर जू सरस शील गोविन्द जु साथहिं।
बालकृष्ण जसवीर धीर श्रीगोकुल नाथहिं।।
श्रीरघुनाथ जु महाराज श्रीजदुनाथहिं भजि।
श्रीघनश्याम जु पगे प्रभू अनुरागी सुधि सजि।।
ए सात प्रगट विभु भजन जग तारन तस जस गाइयै।
(श्री) विट्ठलेश सुत सुहृद् श्रीगोवरधनधर ध्याइयै।।८०।।

श्रीकृष्णदासजी

गिरिधरन रीझि कृष्णदास कौं नाम माँझ साझौ दियौ।।
श्रीवल्लभ गुरुदत्त भजन सागर गुन आगर।
कवित नोख निर्दोष नाथ सेवा में नागर।।
वानी वन्दित विदुष सुजस गोपाल अलंकृत।
ब्रजरज अति आराध्य वहै धारी सर्वसु चित।।
सान्निध्य सदा हरिदासवर्य गौरश्याम दृढ़ व्रत लियौ।
गिरिधरन रीझि कृष्णदास कौं नाम माँझ साझौ दियौ।।८१।।

श्रीवर्द्धमानजी, श्रीगंगलजी

वर्द्धमान गंगल गम्भीर उभै थंभ हरिभक्ति के।।
श्रीभागौत बखानि अमृतमय नदी बहाई।
अमल करी सब अवनि ताप हारक सुखदाई।।
भक्तन सौं अनुराग दीन सौं परम दयाकर।
भजन जसोदानन्द सन्त संघट के आगर।।
भीषमभट्ट अंगज उदार कलियुग दाता सुगति के।
वर्द्धमान गंगल गम्भीर उभै थंभ हरिभक्ति के।।८२।।

श्रीखेम गोसाँईजी

रामदास परताप तें खेम गुसाँईं खेमकर।।
रघुनन्दन को दास प्रगट भू–मण्डल जानै।
सर्वसु सीताराम और कछु उर नहिं आनै।।
धनुष बान सौं प्रीति स्वामि के आयुध प्यारे।
निकट निरन्तर रहत होत कबहूँ नहिं न्यारे।।
सूरवीर हनुमत् सदृश परम उपासक प्रेम भर।
रामदास परताप तैं खेम गुसाँईं खेमकर।।८३।।

श्रीविट्ठलदासजी

विट्ठलदास माथुर मुकुट भयौ अमानी मानदा।।
तिलक दाम सौं प्रीति गुनहिं गुन अन्तर धार्‌यौ।
भक्तन को उत्कर्ष जनम भरि रसन उचार्‌यौ।।
सरल हृदै सन्तोष जहाँ तँह पर उपकारी।
उत्सव में सुत दान कर्म कियो दुसकर भारी।।
हरि गोविन्द जै–जै गोविन्द गिरा सदा आनन्ददा।
विट्ठलदास माथुर मुकुट भयौ अमानी मानदा।।८४।।

श्रीहरिरामजी हठीले

हरिराम हठीले भजनबल राणा को उत्तर दियौ।।
उग्र तेज ऊदार सुघर सुथराई सींवा।
प्रेमपुंज रसरासि सदा गद्‌गद सुर ग्रीवा।।
भक्तन को अपराध करै ताकौ फल गायौ।
हिरण्यकशिपु प्रह्लाद प्रगट दृष्टान्त दिखायौ।।
सस्फुट वकता जगत् में राजसभा निधरक हियौ।
हरिराम हठीले भजनबल राणा को उत्तर दियौ।।८५।।

श्रीकमलाकरभट्टजी

कमलाकर भट्ट जगत् में तत्त्ववाद रोपी धुजा।।
पण्डित कला प्रवीन अधिक आदर दे आरज।
सम्प्रदाय सिर छत्र द्वितीय मनौं मध्वाचारज।।
जेतिक हरि अवतार सबै पूरन करि जानै।
परिपाटी ध्वज विजै सदृश भागौत बखानै।।
श्रुति स्मृति सम्मत पुरान तप्तमुद्रा धारी भुजा।
कमलाकर भट्ट जगत् में तत्त्ववाद रोपी धुजा।।८६।।

श्रीनारायणभट्टजी

ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो रचि पचि हरि एकै कियौ।।
गोप्य स्थल मथुरा मण्डल जिते वाराह बखाने।
ते किये नारायण प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वी में जाने।।
भक्तिसुधा कौ सिन्धु सदा सतसंग समाजन।
परम रसज्ञ अनन्य कृष्णलीला कौ भाजन।।
ज्ञान स्मारत पच्छ कौं नाहिन कोउ खण्डन बियौ।
ब्रजभूमि उपासक भट्ट सो रचि पचि हरि एकै कियौ।।८७।।

श्रीब्रजवल्लभजी

ब्रजवल्लभ वल्लभ सुवन दुर्लभ सुख नैंननि दिये।।
नृत्य गान गुन निपुन रास में रस बरषावत।
अब लीला ललितादि बलित दम्पतिहिं रिझावत।।
अति उदार निस्तार सुजस ब्रजमण्डल राजत।
महा महोत्सव करत बहुत सबही सुख साजत।।
श्रीनारायण भट्ट प्रभु परम प्रीति रस बस किये।
ब्रजवल्लभ वल्लभ सुवन दुर्लभ सुख नैंननि दिये।।८८।।

श्रीरूप–सनातन गोसाँईजी

संसार स्वाद सुख बांत ज्यौं दुहुँ रूप–सनातन त्यागि दियौ।।
गौड़देश बंगाल हुते सबही अधिकारी।
हय गय भवन भण्डार विभौ भू–भुज उन हारी।।
यह सुख अनित्य विचारि वास वृन्दावन कीन्हौ।
यथा लाभ सन्तोष कुँज करवा मन दीन्हौ।।
ब्रजभूमि रहस्य राधाकृष्ण भक्त तोष उद्धार कियौ।
संसार स्वाद सुख बांत ज्यौं दुहुँ रूप–सनातन त्यागि दियौ।।८९।।

श्रीहितहरिवंश गोसाँईजी

(श्री) हरिवंश गुसाँई भजन की रीति सकृत् कोउ जानिहै।।
(श्री) राधाचरण प्रधान हृदै अति सुदृढ़ उपासी।
कुँजकेलि दम्पत्ति तहाँ की करत खवासी।।
सर्वसु महा प्रसाद प्रसिद्ध ताके अधिकारी।
विधि निषेध नहिं दास अनन्य उत्कट व्रतधारी।।
व्यास सुवन पथ अनुसरै सोई भले पहिचानिहै।
(श्री) हरिवंश गुसाँई भजन की रीति सकृत् कोउ जानिहै।।६०।।

स्वामी श्रीहरिदासजी

(श्री) आसुधीर उद्योतकर रसिक छाप हरिदास की।।
जुगल नाम सौं नेम जपत नित कुँजविहारी।
अवलोकत रहैं केलि सखी सुख के अधिकारी।।
गान कला गन्धर्व स्याम–स्यामा कौं तोषैं।
उत्तम भोग लगाय मोर मरकट तिमि पोषैं।।
नृपति द्वार ठाढ़े रहैं दरसन आसा जास की।
(श्री) आसुधीर उद्योतकर रसिक छाप हरिदास की।।६१।।

श्रीहरिराम व्यासजी

उत्कर्ष तिलक अरु दाम कौ भक्त इष्ट अति व्यास के।।
काहू के आराध्य मच्छ कच्छ नरहरि सूकर।
वामन फरसा धरन सेतबन्धन जु सैलकर।।
एकन कें यह रीति नेम नवधा सौं लाये।
सुकुल सुमोखन सुवन अच्युत गोत्री जु लड़ाये।।
नौगुण तोरि नूपुर गुह्यौ महत् सभा मधि रास के।
उत्कर्ष तिलक अरु दाम कौ भक्त इष्ट अति व्यास के।।६२।।

श्रीजीव गोसाँईजी

(श्री) रूप–सनातन भक्तिजल जीवगुसाँई सर गँभीर।।
बेला भजन सुपक्व कषाय न कबहूँ लागी।
वृन्दावन दृढ़वास जुगल चरननि अनुरागी।।
पोथी लेखन पान अघट अक्षर चित दीनौ।
सद्ग्रन्थनि कौ सार सबै हस्तामल कीनौ।।
सन्देह ग्रन्थि छेदन समर्थ रस रास उपासक परम धीर।
(श्री) रूप–सनातन भक्तिजल जीवगुसाँई सर गँभीर।।६३।।

श्रीवृन्दावनवासी भक्त

वृन्दावन की माधुरी इन मिलि आस्वादन कियौ।।
सर्वसु राधारमन भट्ट गोपाल उजागर।
हृषीकेश भगवान् विपुलबीठल रससागर।।
थानेश्वरी जगन्नाथ लोकनाथ महामुनि मधु श्रीरंग।
कृष्णदास पण्डित उभै अधिकारी हरि अंग।।
घमण्डी युगलकिशोर भृत्य भूगर्भ जीव दृढ़व्रत लियौ।
वृन्दावन की माधुरी इन मिलि आस्वादन कियौ।।६४।।

श्रीरसिकमुरारिजी

(श्री) रसिकमुरारि उदार अति मत्त गजहिं उपदेश दियौ।।
तन मन धन परिवार सहित सेवत सन्तन कहँ।
दिव्य भोग आरती अधिक हरिहूँ ते हिय महँ।।
श्रीवृन्दावनचन्द स्याम – स्यामा रँग भीने।
मगन प्रेम पीयूष पयध परचै बहु दीने।।
श्रीहरिप्रिय श्यामानन्दवर भजन भूमि उद्धार कियौ।
(श्री) रसिकमुरारि उदार अति मत्त गजहिं उपदेश दियौ।।६५।।

भव प्रवाह निस्तार हित अवलम्बन ये जन भये।।
सोझा सींवा अधार धीर हरिनाभ त्रिलोचन।
आसाधर द्यौराजनीर सधना दुखमोचन।।
काशीश्वर अवधूत कृष्ण किंकर कटहरिया।
सोभू ऊदाराम नाम डूँगर व्रत धरिया।।
पदम पदारथ राम दास विमलानन्द अमृतश्रये।
भव प्रवाह निस्तार हित अवलम्बन ये जन भये।।६६।।

श्रीकलिकल्पवृक्ष भक्तजी

करुना छाया भक्तिफल ए कलिजुग पादप रचे।।
जतीरामरावल्लि श्यामखोजी सन्त सीहा।
दलहा पद्म मनोरथ राँका द्यौगू जप जीहा।।
जाड़ा चाचागुरू सवाई चाँदा नापा।
पुरुषोत्तम सौं साँच चतुर कीता (मनकौ) जिहि मेट्यौ आपा।।
मति सुन्दर धीधांग श्रम संसार चाल नाहिन नचे।
करुना छाया भक्तिफल ए कलिजुग पादप रचे।।६७।।

कलि में कामधेनु भक्तजी

पर अर्थ परायन भक्त ये कामधेनु कलियुग्ग के।।
लक्ष्मण लफरा लड़ू सन्त जोधपुर त्यागी।
सूरज कुम्भनदास विमानी खेम विरागी।।
भावन विरही भरत नफर हरिकेश लटेरा।
हरिदास अयोध्या चक्रपानि (दियो) सरजू तट डेरा।।
तिरलोक पुखरदी बिज्जुली उद्धव वनचर वंस के।
पर अर्थ परायन भक्त ये कामधेनु कलियुग्ग के।।६८।।

अभिलाषपूरक भक्तजी

अभिलाष अधिक पूरन करन ये चिन्तामणि चतुरदास।।
सोम भीम सोमनाथ विको विशाखा लमध्याना।
महदा मुकुन्द गयेश त्रिविक्रम रघु जग जाना।।
बालमीकि वृद्धव्यास जगन झाँझू बीठल आचारज।
हरभूलाला हरिदास बाहुबल राघव आरज।।
लाखा छीतर उद्धव कपूर घाटम घोरी कियौ प्रकास।
अभिलाष अधिक पूरन करन ये चिन्तामणि चतुरदास।।९९।।

दिग्गज भक्तजी

भक्तपाल दिग्गज भगत ए थानापति सूर धीर।।
देवानन्द नरहरियानन्द मुकुन्द महीपति सन्तराम तम्बोली।
खेम श्रीरंग नन्द विष्णु बीदा बाजूसुत जोरी।।
छीतम द्वारकादास माधव मांडन रूपा दामोदर।
भल नरहरि भगवान् बाल कान्हर केशव सोहैं घर।।
दास प्रयाग लोहंग गुपाल नागूसुत गृह भक्तभीर।
भक्तपाल दिग्गज भगत ए थानापति सूर धीर।।१००।।

श्रीहरिभजन परायण भक्तजी

बद्रीनाथ उड़ीसे द्वारका सेवक सब हरिभजन पर।।
केसौ पुनि हरिनाथ भीम खेता गोविन्द ब्रह्मचारी।
बालकृष्ण बड़भरथ अच्युत अपया व्रत धारी।।
पण्डा गोपीनाथ मुकुन्दा गजपति महाजस।
गुननिधि जस गोपाल देइ भक्तनि कौ सरबस।।
श्रीअंग सदा सानिधि रहैं कृत पुण्यपुंज भल भाग भर।
बद्रीनाथ उड़ीसे द्वारका सेवक सब हरिभजन पर।।१०१।।

श्रीहरिसुयश प्रचारक भक्तजी

हरि सुजस प्रचुर कर जगत् में ये कविजन अतिसय उदार।।
विद्यापति ब्रह्मदास बहोरन चतुरविहारी।
गोविन्द गंगा रामलाल बरसानियाँ मंगलकारी।।
प्रियदयाल परसराम भक्त भाई खाटी कौ।
नन्दसुवन की छाप कवित केशव कौ नीकौ।।
आसकरन पूरन नृपति भीषम जनदयाल गुन नहिन पार।
हरि सुजस प्रचुर कर जगत् में ये कविजन अतिसय उदार।।१०२।।

श्रीमथुरामण्डलवासी भक्तजी

जे बसे बसत मथुरा मण्डल ते दयादृष्टि मो पर करौ।।
रघुनाथ गोपीनाथ रामभद्र दासूस्वामी।
गुँजामाली चित उत्तम बीठल मरहठ निहकामी।।
यदुनन्दन रघुनाथ रामानन्द गोविन्द मुरली सोती।
हरिदास मिश्र भगवान् मुकुन्द केसौ दण्डोती।।
चतुरभुज चरित्र विष्णुदास बेनी पद मो सिर धरौ।
जे बसे बसत मथुरा मण्डल ते दयादृष्टि मो पर करौ।।१०३।।

श्रीभक्तराज युवतीजनजी

कलिजुग जुवतीजन भक्तराज महिमा सब जानै जगत्।।
सीता झाली सुमति सोभा प्रभुता उमा भटियानी।
गंगा गौरी कुँवरि उबीठा गोपाली गनेसदे रानी।।
कला लखा कृतगढ़ौ मानमती सुचि सतिभामा।
जमुना कोली रामा मृगा देवादे भक्तन विश्रामा।।
जुग जेवा कीकी कमला देवकी हीरा हरिचेरी पोखे भगत।
कलिजुग जुवतीजन भक्तराज महिमा सब जानै जगत्।।१०४।।

हरि के सम्मत जे भगत ते दासनि के दास।।
नरबाहन बाहन बरीस जापू जैमल बीदावत।
जयन्त धारा रूपा अनुभई ऊदारावत।।
गम्भीरे अर्जुन जनार्दन गोविन्द जीता।
दामोदर साँपिले गदा ईश्वर हेमविदीता।।
मयानन्द महिमा अनन्त गुढीले तुलसीदास।
हरि के सम्मत जे भगत ते दासनि के दास।।१०५।।

श्रीमुख पूजा सन्त की आपुन तें अधिकी कही।।
यहै वचन परमान दास गाँवरी जटियाने भाऊ।
बूँदी बनियाँ राम मँड़ौते मोहनवारी दाऊ।।
माड़ौठी जगदीसदास लछमन चटुथावल भारी।
सुनपथ में भगवान् सबै सलखान गुपाल उधारी।।
जोबनेर गोपाल के भक्त इष्टता निर्वही।
श्रीमुख पूजा सन्त की आपुन तें अधिकी कही।।१०६।।

श्रीलाखाजी

परमहंस वंशनि में भयौ विभागी बानरौ।।
मुरधरखण्ड निवास भूप सब आज्ञाकारी।
राम–नाम विश्वास भक्त पद रज व्रतधारी।।
जगन्नाथ के द्वार दँडौतनि प्रभु पै धायौ।
दई दास की दादि हुण्डी करि फेरि पठायौ।।
सुरधुनी ओघ संसर्ग तैं नाम बदल कुच्छित नरौ।
परमहंस वंशनि में भयौ विभागी बानरौ।।१०७।।

श्रीनरसीजी

जगत् विदित नरसी भगत (जिन) गुज्जर धर पावन करी।।
महास्मारत लोग भक्ति लौलेश न जानैं।
माला मुद्रा देखि तासु की निन्दा ठानैं।।
ऐसे कुल उत्पन्न भयौ भागौत सिरोमनि।
ऊसर तें सर कियौ खण्डदोषहिं खोयो जिनि।।
बहुत ठौर परचै दियौ रसरीति भक्ति हिरदै धरी।
जगत् विदित नरसी भगत (जिन) गुज्जर धर पावन करी।।१०८।।

श्रीयशोधरजी

दिवदास वंश जसोधर सदन भई भक्ति अनपायनी।।
सुत कलत्र सम्मत सबै गोविन्द परायन।
सेवत हरि हरिदास द्रवत मुख राम रसायन।।
सीतापति कौ सुजस प्रथम ही गवन बखान्यौ।
द्वै सुत दीजै मोहिं कवित सबही जग जान्यौ।।
गिरा गदित लीला मधुर सन्तनि आनन्ददायिनी।
दिवदास वंश जसोधर सदन भई भक्ति अनपायनी।।१०६।।

श्रीनन्ददासजी

(श्री) नन्ददास आनन्द निधि रसिक सु प्रभु हित रँग मगे।।
लीला पद रस रीति ग्रन्थ रचना में नागर।
सरस उक्ति जुत जुक्ति भक्तिरस गान उजागर।।
प्रचुर पयध लौं सुजस रामपुर ग्राम निवासी।
सकल सुकुल सम्बलित भक्तपद रेनु उपासी।।
चन्द्रहास अग्रज सुहृद परम प्रेम पै में पगे।
(श्री) नन्ददास आनन्द निधि रसिक सु प्रभु हित रँग मगे।।११०।।

श्रीजनगोपालजी

संसार सकल व्यापक भई जकरी जन गोपाल की।।
भक्ति तेज अति भाल सन्त मण्डल कौ मण्डन।
बुधि प्रवेश भागौत ग्रन्थि संशय कौ खण्डन।।
नरहड़ ग्राम निवास देश बागड़ निस्तार्‌यौ।
नवधा भजन प्रबोध अनन्य दासन व्रत धार्‌यौ।।
भक्त कृपा बांछी सदा पदरज राधा लाल की।
संसार सकल व्यापक भई जकरी जन गोपाल की।।१११।।

श्रीमाधवदासजी

माधव दृढ़ महि ऊपरै प्रचुर करी लोटन भगति।।
प्रसिद्ध प्रेम की राशि गढ़ागढ़ परचौ दियौ।
ऊँचे तें भयौ पात स्याम साँचौ पन कीयौ।।
सुत नाती पुनि सदृश चलत ऊही परिपाटी।
भक्तनि सौं अति प्रेम नेम नहिं किहुँ अँग घाटी।।
नृत्य करत नहिं तन सँभार समसर जनकन की सकति।
माधव दृढ़ महि ऊपरै प्रचुर करी लोटन भगति।।११२।।

श्रीअंगदजी

अभिलाष भक्त अंगद कौ पुरुषोत्तम पूरन कर्‌यौ।।
नग अमोल इक ताहि सबै भूपति मिलि जाचैं।
साम दाम बहु करैं दास नाहिन मत काचैं।।
एक समै संकष्ट लेय पानी महँ डार्‌यौ।
प्रभो तिहारी वस्तु वदन ते वचन उचार्‌यौ।।
पाँच दोय सत कोस ते हरि हीरा लै उर धर्‌यौ।
अभिलाष भक्त अंगद कौ पुरुषोत्तम पूरन कर्‌यौ।।११३।।

भक्तनि कौ आदर अधिक राजवंश में इन कियौ।।
लघु मथुरा मेरता भक्त अति जैमल पोषे।
टोड़े भजन निधान रामचन्द्र हरिजन तोषे।।
अभैराम एक रसहिं नेम नींवा के भारी।
करमशील सुरतान भगवान् बीरम भूपति व्रतधारी।।
ईश्वर अखैराज रायमल कन्हर मधुकर नृप सरबसु दियौ।
भक्तनि कौ आदर अधिक राजवंश में इन कियौ।।११७।।

श्रीखेमालरत्नजी

खेमालरतन राठौर के अटल भक्ति आई सदन।।
रैना पर गुण राम भजन भागौत उजागर।
प्रेमी परम किशोर उदर राजत रतनाकर।।
हरिदासन के दास दसा ऊँची ध्वज धारी।
निर्भय अननि उदार रसिक जस रसना भारी।।
दशधा सम्पति सन्त बल सदा रहत प्रफुलित वदन।
खेमालरतन राठौर के अटल भक्ति आई सदन।।११८।।

श्रीरामरयनजी

कलिजुग भक्ति करीं कमान रामरैन कैं रिजु करी।।
अजर धर्म आचर्‌यौ लोक हित मनौ नीलकंठ।
निन्दकजन अनिराय कहा महिमा जानैगो भूसठ।।
विदित गान्धर्वी ब्याह कियौ दुसकन्त प्रमानै।
भरत पुत्र भागौत सुमुख शुकदेव बखानै।।
और भूप कोउ छ्‌वै सकै दृष्टि जाय नाहिन धरी।
कलियुग भक्ति करीं कमान रामरैन कैं रिजु करी।।११९।।

श्रीरामरयनजी की धर्मपत्नी

हरि गुरु हरिदासनि सौं रामघरनि साँची रही।।
आरज कौ उपदेश सुतौ उर नीके धार्‌यौ।
नवधा दशधा प्रीति आन सबै धर्म बिसार्‌यौ।।
अच्युतकुल अनुराग प्रगट पुरुषारथ जान्यौ।
सारासार विवेक बात तीनौं मन मान्यौ।।
दासत्व अनन्य उदारता सन्तनि मुख राजा कही।
हरि गुरु हरिदासनि सौं रामघरनि साँची रही।।१२०।।

श्रीकिशोरसिंहजी

अभिलाष उभै खैमाल का ते किशोर पूरा किया।।
पाँयनि नूपुर बाँधि नृत्य नगधर हित नाच्यौ।
राम कलस मन रली सीस तातें नहिं बाच्यौ।।
वानी विमल उदार भक्ति महिमा विस्तारी।
प्रेमपुंज सुठि सील विनय सन्तनि रुचिकारी।।
सृष्टि सराहै राम सुव लघु वयस लछन आरज लिया।
अभिलाष उभै खैमाल का ते किशोर पूरा किया।।१२१।।

श्रीहरीदासजी

खेमालरतन राठौर की सुफल बेलि मीठी फली।।
हरीदास हरिभक्त भक्ति मन्दिर कौ कलसौ।
भजन भाव परिपक्व हृदै भागीरथि जल सौ।।
त्रिधा भाँति अति अनन्य राम की रीति निबाही।
हरि गुरु हरिबल भाँति तिनहिं सेवा दृढ़ साही।।
पूरन इन्दु प्रमुदित उदधि त्यों दास देखि बाढ़े रली।
खेमालरतन राठौर की सुफल बेलि मीठी फली।।१२२।।

श्रीचतुर्भुजदासजी कीर्तननिष्ठ

(श्री) हरिवंश चरनबल चतुरभुज गौंड़ देश तीरथ कियौ।।
गायौ भक्ति प्रताप सबहिं दासत्व दृढ़ायौ।
राधावल्लभ भजन अनन्यता वर्ग बढ़ायौ।।
मुरलीधर की छाप कवित अति ही निर्दूषन।
भक्तनि की अँघ्रिरेनु वहै धारी सिर भूषन।।
सत्संग महा आनन्द में प्रेम रहत भीज्यो हियौ।
(श्री) हरिवंश चरनबल चतुरभुज गौंड़ देश तीरथ कियौ।।१२३।।

श्रीकृष्णदासजी चालक

चालक की चरचरी चहुँदिसि उदधि अन्त लौं अनुसरी।।
सक्रकोप सुठि चरित प्रसिध पुनि पंचाध्यायी।
कृष्ण रुक्मिनी केलि रुचिर भोजन विधि गाई।।
गिरिराजधरन की छाप गिरा जलधर ज्यौं गाजै।
सन्त सिखण्डी खण्ड हृदै आनन्द के काजै।।
जाड़ा हरन जग जाड़ता कृष्णदास देही धरी।
चालक की चरचरी चहुँदिसि उदधि अन्त लौं अनुसरी।।१२४।।

श्रीसन्तदासजी

विमलानन्द प्रबोध वंश सन्तदास सींवा धरम।।
गोपीनाथ पद राग भोग छप्पन भुंजाये।
पृथु पद्धति अनुसार देव दम्पति दुलराये।।
भगवत् भक्त समान ठौर द्वै कौ बल गायौ।
कवित सूर सौं मिलत भेद कछु जात न पायौ।।
जन्म कर्म लीला जुगति रहसि भक्ति भेदी मरम।
विमलानन्द प्रबोध वंश सन्तदास सींवा धरम।।१२५।।

श्रीसूरदासजी—मदनमोहन

(श्री) मदनमोहन सूरदास की नाम शृंखला जुरी अटल।।
गान काव्य गुणराशि सुहृद् सहचरि अवतारी।
राधाकृष्ण उपास्य रहसि सुख के अधिकारी।।
नवरस मुख्य सिंगार विविध भाँतिन करि गायौ।
वदन उच्चरित बेर सहस पायनि ह्वै धायौ।।
अंगीकार की अवधि यह ज्यों आख्या भ्राता जमल।
(श्री) मदनमोहन सूरदास की नाम शृंखला जुरी अटल।।१२६।।

श्रीकात्यायनीजी

कात्यायनी के प्रेम की बात जात कापै कही।।
मारग जात अकेल गान रसना जु उचारैं।
ताल मृदंगी वृक्ष रीझि अम्बर तहँ डारैं।।
गोप नारि अनुसारि गिरा गद्‌गद आवेशी।
जग प्रपंच ते दूरि अजा परसै नहिं लेशी।।
भगवान् रीति अनुराग की सन्त साखि मेली सही।
कात्यायनी के प्रेम की बात जात कापै कही।।१२७।।

श्रीमुरारिदासजी

कृष्ण विरह कुन्ती शरीर त्यों मुरारि तन त्यागियौ।।
विदित बिलौंदा गाँव देश मुरधर सब जानै।
महा महोच्छौ मध्य सन्त परिषद् परवानै।।
पगनि घूँघुरू बाँधि राम कौ चरित दिखायौ।
देसी सारँगपाणि हंस ता संग पठायौ।।
उपमा और न जगत् में पृथा बिना नाहिन बियौ।
कृष्ण विरह कुन्ती शरीर त्यों मुरारि तन त्यागियौ।।१२८।।

गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी (भक्तमाल सुमेरु)

कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि तुलसी भयौ।।
त्रेता काव्य निबन्ध करी सतकोटि रमायन।
इक अक्षर उद्धरैं ब्रह्म हत्यादि परायन।।
अब भक्तनि सुखदैन बहुरि लीला विस्तारी।
रामचरन रसमत्त रहत अहनिसि व्रतधारी।।
संसार अपार के पार को सुगम रूप नवका लयौ।
कलि कुटिल जीव निस्तार हित बाल्मीकि तुलसी भयौ।।१२६।।

श्रीमानदासजी

गोप्य केलि रघुनाथ की (श्री) मानदास परगट करी।।
करुना वीर सिंगार आदि उज्ज्वल रस गायौ।
पर उपकारक धीर कवित कविजन मन भायौ।।
कोशलेश पदकमल अननि दासत व्रत लीनौ।
जानकी जीवन सुजस रहत निसिदिन रँग भीनौ।।
रामायन नाटक रहसि युक्ति उक्ति भाषा धरी।
गोप्य केलि रघुनाथ की (श्री) मानदास परगट करी।।१३०।।

श्रीगिरिधरजी

(श्री) वल्लभ जू के वंश में सुरतरु गिरिधर भ्राजमान।।
अर्थ धर्म काम मोक्ष भक्ति अनपायनि दाता।
हस्तामल श्रुति ज्ञान सबहि शास्त्रन के ज्ञाता।।
परिचिर्या ब्रजराज कुँवर कें मन कौं कर्षै।
दरसन परम पुनीत सभा तन अम्मृत वर्षै।।
विट्ठलेश नन्दन सुभाव जग कोऊ नहिं ता समान।
(श्री) वल्लभ जू के वंश में सुरतरु गिरिधर भ्राजमान।।१३१।।

श्रीगोकुलनाथ गोसाँईजी

(श्री) वल्लभ जू के वंश में गुननिधि गोकुलनाथ अति।।
उदधि सदा अक्षोभ सहज सुन्दर मित भाषी।
गुरुवत्तन गिरिराज भलप्पन सब जग साषी।।
विट्ठलेश की भक्ति भयौ बेला दृढ़ ताकैं।
भगवत् तेज प्रताप नमित नरवर पद जाकैं।।
निर्विलीक आसय उदार भजनपुंज गिरिधिरन रति।
(श्री) वल्लभ जू के वंश में गुननिधि गोकुलनाथ अति।।१३२।।

श्रीवनवारीदासजी

रसिक रँगीलौ भजनपुंज सुठि वनवारी स्याम कौ।।
बात कवित बड़ चतुर चोख चौकस अति जानै।
सारा सार विवेक परमहंसनि परवानै।।
सदाचार सन्तोष भूत सबको हितकारी।
आरज गुन तन अमित भक्ति दशधा व्रतधारी।।
दरसन पुनीत आसय उदार आलाप रुचिर सुख धाम कौ।
रसिक रँगीलौ भजनपुंज सुठि वनवारी स्याम कौ।।१३३।।

श्रीनारायण मिश्रजी

भागौत भलीविधि कथन कौ धनि जननी एकै जन्यौ।।
नाम नरायन मिश्र वंश नवला जु उजागर।
भक्तन की अति भीर भक्ति दशधा कौ आगर।।
आगम निगम पुरान सार शास्त्रनि सब देखे।
सुरगुरु शुक सनकादि व्यास नारद जु बिसेखे।।
सुधा बोध मुख सुरधुनी जस वितान जग में तन्यौ।
भागौत भलीविधि कथन कौ धनि जननी एकै जन्यौ।।१३४।।

श्रीराघवदासजी

कलिकाल कठिन जग जीतियो राघौ की पूरी परी।।
काम क्रोध मद मोह लोभ की लहर न लागी।
सूरज ज्यों जल ग्रहै बहुरि ताही ज्यों त्यागी।।
सुन्दर शील सुभाव सदा सन्तन सेवा व्रत।
गुरु धर्म निकष निर्वह्यौ विश्व में विदित बड़ौ भृत।।
अल्हराम रावल कृपा आदि अन्त धुकती धरी।
कलिकाल कठिन जग जीतियो राघौ की पूरी परी।।१३५।।

श्रींबावनजी

हरिदास भलप्पन भजनबल बावन ज्यौं बढ्यौ बावनौ।।
अच्युतकुल सौं दोष सुपनेहूँ उर नहिं आनै।
तिलक दाम अनुराग सबनि गुरुजन करि मानै।।
सदन माँहि वैराग्य विदेहिन की सी भाँती।
रामचरण मकरन्द रहति मनसा मदमाती।।
जोगानन्द उजागर वंश करि निसिदिन हरिगुन गावनौ।
हरिदास भलप्पन भजनबल बावन ज्यों बढ्यौ बावनौ।।१३६।।

श्रीपरशुरामजी

जंगली देश के लोग सब श्रीपरशुराम किय पारषद।।
ज्यों चन्दन कौ पवन नीम्ब पुनि चन्दन करई।
बहुत काल तम निबिड़ उदै दीपक ज्यौं हरई।।
श्रींभट पुनि हरिव्यास सन्त मारग अनुसरई।
कथा कीरतन नेम रसन हरिगुन उच्चरई।।
गोविन्द भक्ति गद रोग गति तिलक दाम सद् वैद हद।
जंगली देश के लोग सब श्रीपरशुराम किय पारषद।।१३७।।

श्रीगदाधरभट्टजी

गुननिकर गदाधरभट्ट अति सबहिन कौ लागै सुखद।।
सज्जन सुहृद सुशील वचन आरज प्रतिपालय।
निर्मत्सर निहकाम कृपा करुणा कौ आलय।।
अनन्य भजन दृढ़ करनि धर्‌यौ वपु भक्तनि काजै।
परम धरम कौ सेतु विदित वृन्दावन गाजै।।
भागौत सुधा बरषै वदन काहू कौं नाहिन दुखद।
गुननिकर गदाधरभट्ट अति सबहिन कौ लागै सुखद।।१३८।।

चारण भक्तजी

चरण शरण चारण भगत हरि गायक एता हुआ।।
चौमुख चौरा चण्ड जगत् ईश्वर गुण जाने।
करमानन्द अरु कोल्ह अल्ह अक्षर परवाने।।
माधौ मथुरा मध्य साधु जीवानन्द सीवाँ।
दूदा नारायणदास नाम मांडन नत ग्रीवाँ।।
चौरासी रूपक चतुर बरनत वानी ज्यों जुवा।
चरण शरण चारण भगत हरि गायक एता हुआ।।१३९।।

श्रीपृथीराजजी

नरदेव उभै भाषा निपुन पृथीराज कविराज हुव।।
सवैया गीत श्लोक बेलि दोहा गुन नवरस।
पिंगल काव्य प्रमान विविध विधि गायौ हरि जस।।
पर दुख विदुख श्लाघ्य वचन रचना जु विचारै।
अर्थ विचित्र निमोल सबै सारंग उर धारै।।
रुक्मिनी लता बरनन अनूप बागीश वदन कल्यान सुव।
नरदेव उभै भाषा निपुन पृथीराज कविराज हुव।।१४०।।

श्रीसींवाजी

द्वारका देखि पालण्टती अचढ़ सीवैं कीधी अटल।।
असुर अजीज अनीति अगिनि मैं हरिपुर कीधौ।
सांगन सुत नैं साद राय रनछोरै दीधौ।।
धरा धाम धन काज मरन बीजा हूँ माँडै।
कमधुज कुटकै हुवौ चौक चतुरभुजनी छाँडै।।
बाढ़ेल बाढ़ कीवी कटक चाँद नाम चाँड़ै सबल।
द्वारका देखि पालण्टती अचढ़ सीवैं कीधी अटल।।१४१।।

श्रीमती रत्नावतीजी

पृथीराज नृप कुलबधू भक्तभूप रतनावती।।
कथा कीरतन प्रीति भीर भक्तनि की भावै।
महा महोच्छौ मुदित नित्य नँदलाल लड़ावै।।
मुकुन्द चरण चिन्तवन भक्ति महिमा ध्वजधारी।
पति पर लोभ न कियौ टेक अपनी नहिं टारी।।
भलपन सबै विशेष ही आमेर सदन सुन खाजिती।
पृथीराज नृप कुलबधू भक्तभूप रतनावती।।१४२।।

श्रीजगन्नाथजी पारीष

पारीष प्रसिद्ध कुल काँथड़्या जगन्नाथ सीवाँ धरम।।
(श्री) रामानुज की रीति प्रीति पन हिरदैं धार्‌यो।
संस्कार सम तत्त्व हंस ज्यौं बुद्धि विचार्‌यौ।।
सदाचार मुनिवृत्ति इन्दिरा पधति उजागर।
रामदास सुत सन्त अनन्य दशधा कौ आगर।।
पुरुषोत्तम परसाद तें उभै अंग पहिर्‌यौ वरम।
पारीष प्रसिद्ध कुल काँथड़्या जगन्नाथ सीवाँ धरम।।१४३।।

श्रीमथुरादासजी

कीरतन करत कर सुपनेहूँ मथुरादास न माँड़ियौ।।
सदाचार सन्तोष सुहृद सुठि शील सुभासै।
हस्तक दीपक उदय मेटि तम वस्तु प्रकासै।।
हरि कौ हिय विस्वास नन्द–नन्दन बल भारी।
कृष्ण कलस सौं नेम जगत् जानै सिर धारी।।
(श्री) वर्द्धमान गुरु वचन रति सो संग्रह नहिं छाँड़ियौ।
कीरतन करत कर सुपनेहूँ मथुरादास न माँड़ियौ।।१४४।।

श्रीनारायणदासजी नृतक

नृतक नारायणदास कौ प्रेमपुंज आगे बढ्यौ।।
पद लीनौ परसिद्ध प्रीति जामें दृढ़ नातो।
अक्षर तनमय भयौ मदनमोहन रँगरातो।।
नाचत सब कोउ आहि काहि पै यह बनि आवै।
चित्र लिखित सौं रह्यौ त्रिभंग देसी जु दिखावै।।
हँड़िया सराय देखत दुनी हरिपुर पदवीं कौं चढ्यौ।
नृतक नारायणदास कौ प्रेमपुंज आगे बढ्यौ।।१४५।।

भूरिदा भक्तजनजी

गुनगन विशद गोपाल के एते जन भये भूरिदा।।
वोहिथ रामगुपाल कुँवरवर गोविन्द मांडिल।
छीति स्वामि जसवन्त गदाधर अनन्तानन्द भल।।
हरिनाभ मिश्र दीनदास बछपाल कन्हर जस गायन।
गोसू रामदास नारद स्याम पुनि हरिनारायन।।
कृष्णजीवन भगवान् जन स्यामदासविहारी अमृतदा।
गुनगन विशद गोपाल के एते जन भये भूरिदा।।१४६।।

संसार से निवृत्त भक्तजनजी

निरवर्त्त भये संसार ते, ते मेरे जजमान सब।।
उद्धव रामरेनु परसराम गंगा धूषेत निवासी।
अच्युतकुल ब्रह्मदास विश्राम सेषसाई के वासी।।
किंकर कुण्डा कृष्णदास खेम सोठा गोपानन्द।
जैदेव राघौ विदुर दयाल दामोदर मोहन परमानन्द।।
उद्धव रघुनाथी चतुरोनगन कुँज ओक जे बसत अब।
निरवर्त्त भये संसार ते, ते मेरे जजमान सब।।१४७।।

स्वामी श्रीचतुरोनगनजी

श्रीस्वामी चतुरोनगन मगन रैन दिन भजन हित।।
सदा युक्त अनुरक्त भक्त मण्डल को पोषत।
पुर मथुरा ब्रजभूमि रमत सबहीं को तोषत।।
परम धरम दृढ़ करन देव श्रीगुरु आराध्यौ।
मधुर वैन सुठि ठौर–ठौर हरिजन सुख साध्यौ।।
सन्त महन्त अनन्त जन जस विस्तारन जासु नित।
श्रीस्वामी चतुरोनगन मगन रैन दिन भजन हित।।१४८।।

भक्तसेवी मधुकरिया भक्तजी

मधुकरी माँगि सेवैं भगत तिन पर हौं बलिहार कियौ।।
गोमा परमानन्द प्रधान द्वारका मथुरा खोरा।
कालुख सांगानेर भलौ भगवान् को जोरा।।
बीठल टोंड़े खेम पण्डा गूनौरै गाजै।
स्यामसेन के वंश चीधर पीपोर विराजै।।
जैतारन गोपाल के केवल कूबै मोल लियौ।
मधुकरी माँगि सेवैं भगत तिन पर हौं बलिहार कियौ।।१४९।।

श्रीअग्रदेवजी के शिष्य

श्रीअग्र अनुग्रह तें भये शिष्य सबै धर्म की धुजा।।
जंगी प्रसिद्ध प्रयाग विनोदी पूरन वनवारी।
नरसिंह भल भगवान् दिवाकर दृढ़व्रत धारी।।
कोमल हृदै किशोर जगत् जगन्नाथ सलूधौ।
औरौ अनुग उदार खेम खीची धरमधीर लघु ऊधौ।।
त्रिविध ताप मोचन सबै सौरभ प्रभु निज सिर भुजा।
श्रीअग्र अनुग्रह तें भये शिष्य सबै धर्म की धुजा।।१५०।।

श्रीटीलाजी का वंश

भरतखण्ड भूधर सुमेर टीला लाहा की पद्धति प्रगट।।
अंगद परमानन्द दास जोगी जग जागै।
खरतर खेम उदार ध्यान केसौ हरिजन अनुरागै।।
सस्फुट त्योला शब्द लोहकर वंश उजागर।
हरीदास कपि प्रेम सबै नवधा के आगर।।
अच्युतकुल सेवैं सदा दासन तन दसधा अघट।
भरतखण्ड भूधर सुमेर टीला लाहा की पद्धति प्रगट।।१५१।।

श्रीकान्हरदासजी

मधुपुरी महोच्छौ मंगलरूप कान्हर को सौ को करैं।।
चारि वरन आश्रम रंक राजा अँन पावैं।
भक्तनि कौ बहु मान विमुख कोऊ नहिं जावैं।।
बीरी चन्दन वसन कृष्ण को कीरतन बरखैं।
प्रभु के भूषन देय महामन अतिसय हरखैं।।
वीठल सुत विमल्यौ फिरै दास चरणरज सिर धरैं।
मधुपुरी महोच्छौ मंगलरूप कान्हर को सौ को करैं।।१५२।।

श्रीनीवाजी

भक्तनि सौं कलिजुग भलैं निबाही नीवा खेतसी।।
आवहिं दास अनेक उठि सु आदर करि लीजै।
चरण धोय दण्डौत सदन में डेरा दीजै।।
ठौर–ठौर हरिकथा हृदै अति हरिजन भावैं।
मधुर वचन मुँह लाय विविध भाँतिन्ह जु लड़ावैं।।
सावधान सेवा करैं निर्दूषन रति चेतसी।
भक्तनि सौं कलिजुग भलैं निबाही नीवा खेतसी।।१५३।।

श्रीतूँवर भगवान्जी

बसन बढ़े कुन्ती बधू त्यौं तूँवर भगवान् के।।
यह अचरज भयौ एक खाँड़ घृत मैदा बरषै।
रजत रुक्म की रेल सृष्टि सबही मन हरषै।।
भोजन रास विलास कृष्ण को कीरतन कीनौ।
भक्तनि कौ बहुमान दान सबही कौ दीनौ।।
कीरति कीनी भीम सुत सुनि भूप मनोरथ आनके।
बसन बढ़े कुन्ती बधू त्यौं तूँवर भगवान् के।।१५४।।

श्रीजसवन्तजी

जसवन्त भक्ति जयमाल की रूड़ा राखी राठवड़।।
भक्तनि सौं अति भाव निरन्तर अन्तर नाहीं।
करजोरे इक पाँय मुदित मन आज्ञा माहीं।।
श्रीवृन्दावन वास कुँज क्रीड़ा रुचि भावै।
राधावल्लभलाल नित्तप्रति ताहि लड़ावै।।
परम धरम नवधा प्रधान सदन साँच निधि प्रेम जड़।
जसवन्त भक्ति जयमाल की रूड़ा राखी राठवड़।।१५५।।

श्रीहरीदासजी

हरीदास भक्तनि हित धनि जननी एकै जन्यौ।।
अमित महागुन गोप्य सार वित सोई जानै।
देखत कौ तुलाधार दूर आसै उनमानै।।
देय दमामौ पैंज विदित वृन्दावन पायौ।
राधावल्लभ भजन प्रगट परताप दिखायौ।।
परम धरम साधन सुदृढ़ कलियुग कामधेनु में गन्यौ।
हरीदास भक्तनि हित धनि जननी एकै जन्यौ।।१५६।।

श्रीगोपालदासजी, श्रीविष्णुदासजी

भक्ति भार जूड़ैं जुगल धर्म धुरन्धर जग विदित।।
बाँबोली गोपाल गुननि गम्भीर गुनारट।
दच्छिन दिसि विष्णुदास गाँव काशीर भजन भट।।
भक्तनि सो यह भाय भजै गुरु गोविन्द जैसे।
तिलक दाम आधीन सुवर सन्तनि प्रति तैसे।।
अच्युतकुल पन एकरस निबह्यौ ज्यौं श्रीमुख गदित।
भक्ति भार जूड़ैं जुगल धर्म धुरन्धर जग विदित।।१५७।।

श्रीकील्हदेवजी के शिष्यजन

कील्ह कृपा कीरति विशद् परम पारषद सिष प्रगट।।
आसकरन रिषिराज रूप भगवान् भक्त गुर।
चतुरदास जग अभय छाप छीतर जु चतुरवर।।
लाखै अद्‌भुत रायमल खेम मनसा क्रम वाचा।
रसिक रायमल गौर देवा दामोदर हरिरँग राँचा।।
सबै सुमंगल दास दृढ़ धर्म धुरन्धर भजन भट।
कील्ह कृपा कीरति विशद् परम पारषद सिष प्रगट।।१५८।।

श्रीनाथभट्टजी

रसरास उपासक भक्तराज नाथभट्ट निर्मल वयन।।
आगम निगम पुरान सार शास्त्रनि जु विचार्यौ।
ज्यौं पारौ दै पुटहिं सबनि कौ सार उधार्यौ।।
श्रीरूप–सनातन जीव भट्ट नारायण भाख्यौ।
सो सर्वसु उर साँच जतन करि नीके राख्यौ।।
फनीवंश गोपाल सुव रागा अनुगा कौ अयन।
रसरास उपासक भक्तराज नाथभट्ट निर्मल वयन।।१५६।।

श्रीकरमैतीजी

कठिन काल कलियुग्ग में करमैती निकलंक रही।।
नश्वर पति–रति त्यागि कृष्णपद सौं रति जोरी।
सबै जगत् की फाँसि तरकि तिनुका ज्यौं तोरी।।
निरमल कुल काँथड़्या धन्य परसा जिहिं जाई।
विदित वृन्दावन वास सन्त मुख करत बड़ाई।।
संसार स्वाद सुख बांत करि फेरि नहीं तिन तन चही।
कठिन काल कलियुग्ग में करमैती निकलंक रही।।१६०।।

श्रीखंगसेनजी कायस्थ

गोविन्दचन्द गुन ग्रथन को खर्गसेन वानी विशद्।।
गोपी ग्वाल पितु मातु नाम निरनै कियौ भारी।
दान केलि दीपक प्रचुर अति बुद्धि उचारी।।
सखा सखी गोपाल काल लीला में बितयौ।
कायथकुल उद्धार भक्ति दृढ़ अनत न चितयौ।।
गौतमी तन्त्र उर ध्यान धरि तन त्याग्यो मण्डल शरद्।
गोविन्दचन्द गुन ग्रथन को खर्गसेन वानी विशद्।।१६१।।

श्रीगंगग्वालजी

सखा श्याम मन भावतौ गंगग्वाल गम्भीर मति।।
श्यामा जू की सखी नाम आगम विधि पायौ।
ग्वाल गाय ब्रज गाँव पृथक् नीके करि गायौ।।
कृष्ण केलि सुखसिन्धु अघट उर अन्तर धरई।
ता रस में नित मगन असद् आलाप न करई।।
ब्रजवास आस ब्रजनाथ गुरुभक्त चरणरज अननि गति।
सखा श्याम मन भावतौ गंगग्वाल गम्भीर मति।।१६२।।

श्रीसोतीजी

सोती श्लाघ्य सन्तनि सभा दुतिय दिवाकर जानियो।।
परम भक्ति परताप धर्मध्वज नेजा धारी।
सीतापति को सुजस वदन शोभित अति भारी।।
जानकी जीवन चरण शरण थाती थिर पाई।
नरहरि गुरु परसाद पूत पोते चलि आई।।
राम उपासक छाप दृढ़ और न कछु उर आनियो।
सोती श्लाघ्य सन्तनि सभा दुतिय दिवाकर जानियो।।१६३।।

श्रीलालदासजी

जीवत जस पुनि परमपद लालदास दोनों लही।।
हृदै हरीगुन खानि सदा सत्संग अनुरागी।
पद्मपत्र ज्यौं रह्यौ लोभ की लहर न लागी।।
विष्णुरात सम रीति बँधेरै त्यौं तन त्याज्यो।
भक्त बरातीवृन्द मध्य दूलह ज्यौं राज्यो।।
खरी भक्ति हरिषांपुरे गुरुप्रताप गाढ़ी गही।
जीवत जस पुनि परमपद लालदास दोनों लही।।१६४।।

श्रीमाधवग्वालजी

भक्तनि हित भगवत् रची देही माधवग्वाल की।
निसिदिन यहै विचार दास जिहि विधि सुख पावैं।
तिलक दाम सौं प्रीति हृदै अति हरिजन भावैं।।
परमारथ सौं काज हिये स्वारथ नहिं जानै।
दशधा मत्त मराल सदा लीला गुण गानै।।
आरत हरिगुण शील सम प्रीति रीति प्रतिपाल की।
भक्तनि हित भगवत् रची देही माधवग्वाल की।।१६५।।

श्रीप्रयागदासजी

"श्रीअगर" सुगुरु परताप तें पूरी परी प्रयाग की।।
मानस वाचक काय राम चरणनि चित दीनौ।
भक्तनि सौं अति प्रेम भावना करि सिर लीनौ।।
रास मध्य निर्जान देह दुतिदसा दिखाई।
आड़ौ बलियौ अंक महोच्छौ पूरी पाई।।
क्यारे कलस औली ध्वजा विदुष शलाघा भाग की।
"श्रीअगर" सुगुरु परताप तें पूरी परी प्रयाग की।।१६६।।

श्रीप्रेमनिधिजी

प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि धन्य विप्र जिन नाम धर्यौ।।
सुन्दर शील सुभाव मधुर वानी मंगल करु।
भक्तनि कौं सुख दैन फल्यौ बहुधा दसधा तरु।।
सदन बसत निर्वेद सारभुक जगत् असंगी।
सदाचार ऊदार नेम हरिदास प्रसंगी।।
दयादृष्टि बसि आगरैं कथा लोक पावन कर्यौ।
प्रगट अमित गुन प्रेमनिधि धन्य विप्र जिन नाम धर्यौ।।१६७।।

श्रीराघवदासजी दूबलो

दूबरो जाहि दुनियाँ कहै सो भक्त भजन मोटौ महन्त।।
सदाचार गुरु शिष्य त्याग विधि प्रगट दिखाई।
बाहर भीतर विशद् लगी नहिं कलियुग काई।।
राघौ रुचिर सुभाव असद् आलाप न भावै।
कथा कीर्त्तन नेम मिलैं सन्तनि गुन गावै।।
ताय तोलि पूरौ निकष ज्यौं घन अहरनि हीरौ सहन्त।
दूबरो जाहि दुनियाँ कहै सो भक्त भजन मोटौ महन्त।।१६८।।

दासनि के दासत्व कौ चौकस चौकी ये मड़ी।।
हरि नारायण नृपति पद्म बेरछै विराजैं।
गाँव हुसंगाबाद अटल ऊधौ भल छाजैं।।
भेलै तुलसीदास भट ख्यात देवकल्याने।
बोहिथवीरा रामदास सुहेलैं परम सुजाने।।
औली परमानन्द कै ध्वजा सबल धर्म की गड़ी।
दासनि के दासत्व कौ चौकस चौकी ये मड़ी।।१६६।।

अवला शरीर साधन सबल ये बाई हरिभजन बल।।
देमा प्रगट सब दुनी रामाबाई वीराँ हीरामनि।
लाली नीरा लक्ष्मि जुगुल पार्वती जगत् धनि।।
खीचनि केसी धना गोमती भक्त उपासिनी।
बाँदररानी विदित गंगा जमुना रैदासिनि।।
जेवा हरिषां जोइसिनि कुँवरिराय कीरति अमल।
अवला शरीर साधन सबल ये बाई हरिभजन बल।।१७०।।

श्रीकान्हरदासजी

कान्हरदास सन्तनि कृपा हरि हिरदै लाहौ लह्यौ।।
श्रीगुरु शरणै आय भक्ति मारग सत जान्यौ।
संसारी धर्महिं छाँड़ि झूठ अरु साँच पिछान्यौ।।
ज्यौं साखा द्रुम चन्द जगत् सौं इहि विधि न्यारौ।
सर्वभूत समदृष्टि गुननि गम्भीर अति भारौ।।
भक्त भलाई वदन नित कुवचन कबहूँ नहिं कह्यौ।
कान्हरदास सन्तनि कृपा हरि हिरदै लाहौ लह्यौ।।१७१।।

श्रीकेशवलटेरा, श्रीपरशुरामजी

लट्यौ लटेरा आन विधि परम धरम अति पीन तन।।
कहनी रहनी एक, एक प्रभुपद अनुरागी।
जस वितान जग तन्यौ सन्त सम्मत बड़भागी।।
तैसोइ पूत सपूत नूत फल जैसोइ परसा।
हरि हरिदासनि टहल कवित रचना पुनि सरसा।।
(श्री) सुरसुरानन्द सम्प्रदाय दृढ़ केसव अधिक उदार मन।
लट्यौ लटेरा आन विधि परम धरम अति पीन तन।।१७२।।

श्रीकेवलरामजी

केवलराम कलियुग्ग के पतित जीव पावन किये।।
भक्ति भागवत विमुख जगत् गुरु नाम न जानैं।
ऐसे लोक अनेक ऐंचि सनमारग आनैं।।
निर्मल रति निहकाम अजा तें सदा उदासी।
तत्वदरसी तमहरन शील करुना की रासी।।
तिलक दाम नवधारतन कृष्ण कृपा करि दृढ़ दिये।
केवलराम कलियुग्ग के पतित जीव पावन किये।।१७३।।

श्रीआशकरणजी

(श्री) मोहन मिश्रित पद कमल आसकरन जस विस्तर्यौ।।
धर्मशील गुनसींव महा भागवत राजरिषि।
पृथीराज कुल दीप भीम सुत विदित कील्ह सिषि।।
सदाचार अति चतुर विमल वानी रचना पद।
सूरधीर ऊदार विनै भलपन भक्तनि हद।।
सीतापति राधासुवर भजन नेम कूरम धर्यौ।
(श्री) मोहन मिश्रित पद कमल आसकरन जस विस्तर्यौ।।१७४।।

श्रीहरिवंशजी

निहिकिंचन भक्तनि भजैं हरि प्रतीति हरिवंश के।।
कथा कीर्तन प्रीति सन्तसेवा अनुरागी।
खरिया खुरपा रीति ताहि ज्यौं सर्वसु त्यागी।।
सन्तोषी सुठि शील असद् आलाप न भावै।
काल वृथा नहिं जाय निरन्तर गोविन्द गावै।।
सिष सपूत श्रीरंग को उदित पारषद अंस के।
निहिकिंचन भक्तनि भजैं हरि प्रतीति हरिवंश के।।१७५।।

श्रीकल्याणजी

हरिभक्ति भलाई गुन गम्भीर बाँटे परी कल्यान के।।
नवलकिशोर दृढ़व्रत अनन्य मारग इक धारा।
मधुर वचन मन हरन सुखद जानत संसारा।।
पर उपकार विचार सदा करुना की रासी।
मन वच सर्वसु रूप भक्तपद रेनु उपासी।।
धर्मदास सुत शील सुठि मन मान्यौ कृष्ण सुजान के।
हरिभक्ति भलाई गुन गम्भीर बाँटे परी कल्यान के।।१७६।।

श्रीबीठलदासजी

बीठलदास हरिभक्ति के दुहूँ हाथ लाड़ू लिये।।
आदि अन्त निर्वाह भक्तपद रज व्रतधारी।
रह्यौ जगत् सौं ऐंड़ तुच्छ जाने संसारी।।
प्रभुता पति की पधति प्रगट कुल दीप प्रकासी।
महत् सभा में मान जगत् जानै रैदासी।।
पद पढ़त भई परलोक गति गुरु गोविन्द जुग फल दिये।
बीठलदास हरिभक्ति के दुहूँ हाथ लाड़ू लिये।।१७७।।

भगवन्त रचे भारी भगत भक्तनि के सनमान को।।
क्वाहब श्रीरँग सुमति सदानन्द सर्वसु त्यागी।
श्यामदास लघुलम्ब अननि लाखै अनुरागी।।
मारू मुदित कल्यान परस वंसी नारायन।
चेता ग्वाल गोपाल शंकर लीला परायन।।
सन्तसेय कारंज किया तोषत श्याम सुजान को।
भगवन्त रचे भारी भगत भक्तनि के सनमान को।।१७८।।

श्रीहरीदासजी

तिलक दाम पर काम कौं हरीदास हरि निर्मयो।।
सरनागत कौं सिविर दान दधीचि टेक बलि।
परमधर्म प्रह्लाद सीस देन जगदेव कलि।।
बीकावत बानैत भक्तपन धर्मधुरन्धर।
तूँवर कुलदीपक सन्तसेवा नित अनुसर।।
पारथपीठ अचरज कौन सकल जगत् में जस लियो।
तिलक दाम पर काम कौं हरीदास हरि निर्मयो।।१७९।।

श्रीगोविन्ददासजी

टेक एक वंशी तनी जन गोविन्द की निर्वही।।
युगुलचन्द किरपाल तासु को दास कहावै।
बादशाह सौं पैज हुकुम नहिं वेनु बजावै।।
बीकावत बानैत भक्त पाण्डव अवतारी।
कपि ज्यौं बीरा लियो सीस अम्बर कै झारी।।
पीठ परीक्षित सारका सभा शाष सन्तन कही।
टेक एक वंशी तनी जन गोविन्द की निर्वही।।

श्रीकृष्णदासजी

नन्दकुँवर कृष्णदास कौं निज पग तें नूपुर दियौ।।
तान मान सुर ताल सुलय सुन्दरि सुठि सोहै।
सुधा अंग भ्रूभंग गान उपमा को कोहै।।
रत्नाकर संगीत रागमाला रँगरासी।
रिझये राधालाल भक्तपद रेनु उपासी।।
स्वर्णकार खरगू सुवन भक्त भजनपन दृढ़ लियौ।
नन्दकुँवर कृष्णदास कौं निज पग तें नूपुर दियौ।।१८०।।

परमधर्म पोषक संन्यासी भक्तजी

परमधर्म प्रति पोषकौं संन्यासी ए मुकुटमनि।।
चित्सुख टीकाकार भक्ति सर्वोपरि राखी।
श्रीदामोदर तीर्थ रामअर्चन विधि भाखी।।
चन्द्रोदय हरिभक्ति नरसिंहारन कीनी।
माधौ मधुसूदन सरस्वती परमहंस कीरति लीनी।।
प्रबोधानन्द रामभद्र जगदानन्द कलिजुग्ग धनि।
परमधर्म प्रति पोषकौं संन्यासी ए मुकुटमनि।।१८१।।

श्रीद्वारकादासजी

अष्टांगयोग तन त्यागियौ द्वारकादास जानै दुनि।।
सरिता कूकस गाँव सलिल में ध्यान धर्‌यौ मन।
राम चरण अनुराग सुदृढ़ जाके साँचौ पन।।
सुत कलत्र धन धाम ताहि सौं सदा उदासी।
कठिन मोह कौ फंद तरकि तोरी कुल फाँसी।।
कील्ह कृपा बल भजन के ज्ञान खड्‌ग माया हनी।
अष्टांगयोग तन त्यागियौ द्वारकादास जानै दुनि।।१८२।।

श्रीपूर्णजी

पूरन प्रगट महिमा अनन्त करिहै कौन बखान।।
उदै अस्त परवत गहिर मधि सरिता भारी।
जोग जुगति विश्वास तहाँ दृढ़ आसन धारी।।
व्याघ्र सिंघ गुँजैं खरा कछु शंक न मानै।
अर्द्ध न जातैं पौन उलटि ऊरध कौं आनै।।
साखि शब्द निर्मल कहा कथिया पद निर्वान।
पूरन प्रगट महिमा अनन्त करिहै कौन बखान।।१८३।।

श्रीलक्ष्मणभट्‌टजी

श्रीरामानुज पद्धति प्रताप भट्‌ट लक्षमन अनुसर्‌यौ।।
सदाचार मुनिवृत्ति भजन भागवत उजागर।
भक्तनि सौं अति प्रीति भक्ति दशधा कौ आगर।।
सन्तोषी सुठि शील हृदै स्वारथ नहिं लेसी।
परमधर्म प्रतिपाल सन्त मारग उपदेसी।।
श्रीभागवत बखानिकै नीर क्षीर विवरन कर्‌यो।
श्रीरामानुज पद्धति प्रताप भट्‌ट लक्षमन अनुसर्‌यौ।।१८४।।

स्वामी श्रीकृष्णदासजी पयहारी

दधीचि पाछें दूसरि करी कृष्णदास कलि जीति।।
कृष्णदास कलि जीति न्यौति नाहर पल दीयौ।
अतिथि धर्म प्रतिपालि प्रगट जस जग में लीयौ।।
उदासीनता अवधि कनक कामिनी नहिं रात्यो।
राम चरण मकरन्द रहत निसिदिन मद मात्यो।।
गल तें गलित अमित गुण सदाचार सुठि नीति।
दधीचि पाछें दूसरि करी कृष्णदास कलि जीति।।१८५।।

श्रीगदाधरदासजी

भलीभाँति निर्वही भगति सदा गदाधरदास की।।
लालविहारी जपत रहत निसिवासर फूल्यौ।
सेवा सहज सनेह सदा आनन्द रस झूल्यौ।।
भक्तनि सौं अति प्रीति रीति सबही मन भाई।
आशय अधिक उदार रसन हरि कीरति गाई।।
हरि विश्वास हिय आनिकै सुपनेहुँ आन न आस की।
भलीभाँति निर्वही भगति सदा गदाधरदास की।।१८६।।

श्रीनारायणदासजी

हरिभजन सींव स्वामी सरस श्रीनारायणदास अति।।
भक्ति जोग जुत सुदृढ़ देह निज वश करि राखी।
हिये स्वरूपानन्द लाल जस रसना भाखी।।
परिचै प्रचुर प्रताप जानमनि रहस सहायक।
श्रीनारायण प्रगट मनौ लोगनि सुखदायक।।
नित सेवत सन्तनि सहित दाता उत्तर देसगति।
हरिभजन सींव स्वामी सरस श्रीनारायणदास अति।।१८७।।

श्रीभगवानदासजी

भगवानदास श्रीसहित नित सुहृद् शील सज्जन सरस।।
भजन भाव आरूढ़ गूढ़ गुन बलित ललित जस।
श्रोता श्रीभागवत रहसि ज्ञाता अक्षर रस।।
मथुरापुरी निवास आस पद सन्तनि इक चित।
श्रीजुत खोजी श्याम धाम सुखकर अनुचर हित।।
अति गम्भीर सुधीर मति हुलसत मन जाके दरस।
भगवानदास श्रीसहित नित सुहृद् शील सज्जन सरस।।१८८।।

श्रीकल्याणदासजी

भक्तपक्ष उद्‌दारता यह निर्वही कल्यान की।।
जगन्नाथ कौ दास निपुन अति प्रभु मन भायौ।
परम पारषद समुझि जानि प्रिय निकट बुलायौ।।
प्रान पयानौ करत नेह रघुपति सौं जोर्‌यौ।
सुत दारा धन धाम मोह तिनका ज्यौं तोर्‌यौ।।
कौंधनी ध्यान उर में बस्यौ राम नाम मुख जानकी।
भक्तपक्ष उद्‌दारता यह निर्वही कल्यान की।।१८९।।

श्रीसन्तदासजी, श्रीमाधवदासजी

सोदर सोभूराम के सुनौं सन्त तिनकी कथा।।
सन्तदास सद्‌वृत्ति जगत् छोई करि डार्‌यौ।
महिमा महा प्रवीन भक्तवित धर्म विचार्‌यो।।
बहुर्‌यो माधवदास भजन बल परचौ दीनौ।
करि जोगिन सौं वाद वसन पावक प्रति लीनौ।।
परम धर्म विस्तार हित प्रगट भये नाहिन तथा।
सोदर सोभूराम के सुनौ सन्त तिनकी कथा।।१९०।।

श्रीजसवन्तजी

बूड़िये विदित कन्हर कृपाल आत्माराम आगम दरसि।।
कृष्ण भक्ति को थम्भ ब्रह्मकुल परम उजागर।
क्षमा शील गम्भीर सर्व लच्छन कौ आगर।।
सर्वसु हरिजन जानि हृदै अनुराग प्रकासै।
असन वसन सनमान करत अति उज्ज्वल आसै।।
सोभूराम प्रसाद तें कृपादृष्टि सब पर बरसि।
बूड़िये विदित कन्हर कृपाल आत्माराम आगम दरसि।।१६१।।

श्रीगोविन्ददासजी "भक्तमाली"

भक्तरत्न माला सुधन गोविन्द कण्ठ विकास किय।।
रुचिर शील घन नील लील रुचि सुमति सरित पति।
विविध भक्त अनुरक्त व्यक्त बहु चरित चतुर अति।।
लघु दीरघ सुर शुद्ध वचन अविरुद्ध उचारन।
विश्व वास विश्वास दास परिचय विस्तारन।।
जानि जगत् हित सब गुननि सु सम नारायनदास दिय।
भक्तरत्न माला सुधन गोविन्द कण्ठ विकास किय।।१६२।।

श्रीजगत्सिंहजी

भक्तेश भक्त भवतोष कर सन्त नृपति वासो कुँवर।।
श्रीयुत् नृप मनि जगत्सिंह दृढ़भक्ति परायन।
परम प्रीति किये सुवश शील लक्ष्मी नारायन।।
जासु सुजस सहज ही कुटिल कलि कल्प जु घायक।
आज्ञा अटल सुप्रगट सुभट कटकनि सुखदायक।।
अति प्रचण्ड मारतण्ड सम तम खण्डन दोरदण्ड वर।
भक्तेश भक्त भवतोष कर सन्त नृपति वासो कुँवर।।१६३।।

श्रीगिरिधरग्वालजी

गिरिधरन ग्वाल गोपाल कौं सखा साँचलौ संग कौ।।
प्रेमी भक्त प्रसिद्ध गान अति गद्गद वानी।
अन्तर प्रभु सौं प्रीति प्रगट रहै नाहिन छानी।।
नृत्य करत आमोद विपिन तन वसन बिसारै।
हाटक पट हित दान रीझि ततकाल उतारै।।
मालपुरै मंगल करन रास रच्यौ रसरंग कौ।
गिरिधरन ग्वाल गोपाल कौं सखा साँचलौ संग कौ।।१६४।।

श्रीगोपालीजी

गोपाली जनपोषकौं जगत् जसोदा अवतरी।।
प्रगट अंग में प्रेम नेम सौं मोहन सेवा।
कलियुग कलुष न लग्यौ दास तें कबहुँ न छेवा।।
वानी सीतल सुखद सहज गोविन्द धुनि लागी।
लक्षन कला गँभीर धीर सन्तनि अनुरागी।।
अन्तर शुद्ध सदाँ रहै रसिक भक्ति निज उर धरी।
गोपाली जनपोषकौं जगत् जसोदा अवतरी।।१६५।।

श्रीरामदासजी

श्रीरामदास रसरीति सौं भलीभाँति सेवत भगत।।
सीतल परम सुशील वचन कोमल मुख निकसै।
भक्त उदित रवि देखि हृदै बारिज जिमि विकसै।।
अति आनन्द मन उमँगि सन्त परिचर्य्या करई।
चरण धोय दण्डौत विविध भोजन विस्तरई।।
बछवन निवास विस्वास हरि जुगल चरण उर जगमगत।
श्रीरामदास रसरीति सौं भलीभाँति सेवत भगत।।१६६।।

श्रीरामरायजी

विप्र सारसुत घर जनम रामराय हरि रति करी।।
भक्ति ज्ञान वैराग जोग अन्तरगति पाग्यौ।
काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर सब त्याग्यौ।।
कथा कीरतन मगन सदा आनन्द रस झूल्यौ।
सन्त निरखि मन मुदित उदित रवि पंकज फूल्यौ।।
बैर भाव जिन द्रोह किय तासु पाग खसि भ्वैं परी।
विप्र सारसुत घर जनम रामराय हरि रति करी।।१६७।।

श्रीभगवन्तमुदितजी

भगवन्तमुदित उदार जस रस रसना आस्वाद किय।।
कुँजविहारी केलि सदा अभ्यन्तर भासै।
दम्पति सहज सनेह प्रीति परमिति परकासै।।
अननि भजन रसरीति पुष्ट मारग करि देखी।
विधि निषेध बल त्यागि पागि रति हृदय विशेखी।।
माधव सुत सम्मत रसिक तिलक दाम धरि सेव लिय।
भगवन्तमुदित उदार जस रस रसना आस्वाद किय।।१६८।।

श्रीलालमतीजी

दुर्लभ मानुष देह कौं लालमती लाहौ लियौ।।
गौर स्याम सौं प्रीति, प्रीति जमुना कुँजनि सौं।
वंशीवट सौं प्रीति, प्रीति ब्रजरज पुंजनि सौं।।
गोकुल गुरुजन प्रीति, प्रीति घन बारह वन सौं।
पुर मथुरा सौं प्रीति, प्रीति गिरि गोवर्द्धन सौं।।
वास अटल वृन्दाविपिन दृढ़करि सो नागरि कियौ।
दुर्लभ मानुष देह कौ लालमती लाहौ लियौ।।१६९।।

भक्त–परत्व

"अगर" कहैं त्रैलोक में हरि उर धरें तेई बड़े।।
कविजन करत विचार बड़ौ कोउ ताहि भनिज्जै।
कोउ कह अवनी बड़ी जगत् आधार फनिज्जै।।
सो धारी सिर शेष, शेष शिव भूषन कीनौ।
शिव आसन कैलास भुजा भरि रावन लीनौ।।
रावन जीत्यौ बालि, बालि राघो इक सायक दँड़े।
"अगर" कहैं त्रैलोक में हरि उर धरें तेई बड़े।।२००।।

हरि सुजस प्रीति हरिदास कैं त्यौं भावै हरिदास जस।।
नेह परसपर अघट निबहि चारौं जुग आयौ।
अनुचर कौ उत्कर्ष स्याम अपने मुख गायौ।।
ओत–प्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जानैं।
पुर प्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखानैं।।
"अगर" अनुग गुन बरनते सीतापति नित होयँ बस।
हरि सुजस प्रीति हरिदास कैं त्यौं भावै हरिदास जस।।२०१।।

सन्त–उत्कर्ष

उत्कर्ष सुनत सन्तनि कौं अचरज कोऊ जिनि करौ।।
दुर्वासा प्रति स्याम दास बसता हरि भाषी।
ध्रुव गज पुनि प्रह्लाद राम शबरी फल साखी।।
राजसूय जदुनाथ चरण धोय जूंठ उठाई।
पाण्डव विपति निवारि दियौ विष विषया पाई।।
कलि विशेष परचौ प्रगट आस्तिक ह्वैकै चित धरौ।
उत्कर्ष सुनत सन्तनि कौं अचरज कोऊ जिनि करौ।।२०२।।

अन्तिम मंगलाचरण

प्रार्थना

—दोहा—

पादप पीड़हिं सींचते पावै अँग–अँग पोष।
पूरबजा ज्यौं बरनते सब मानियो सन्तोष।।२०३।।

भक्त जिते भू–लोक में कथे कौन पै जायँ।
समुद्र पान श्रद्धा करै कहँ चिरि पेट समायँ।।२०४।।

श्रीमूरति सब वैष्णव (लघु) दीरघ गुणनि अगाध।
आगे पीछे बरनते जिनि मानौ अपराध।।२०५।।

फल की शोभा लाभ तरु, तरु शोभा फल होय।
गुरू शिष्य की कीर्ति में अचरज नाहीं कोय।।२०६।।

चारि जुगन में भगत जे तिनके पद की धूरि।
सर्वसु सिर धरि राखिहौं मेरी जीवन मूरि।।२०७।।

कथन–श्रवण की महिमा

जग कीरति मंगल उदै तीनों ताप नसायँ।
हरिजन को गुण बरनते हरि हृदि अटल बसायँ।।२०८।।

हरिजन को गुण बरनते जो करै असूया आय।
इहाँ उदर बाढ़ै विथा औ परलोक नसाय।।२०९।।

जौं हरि प्राप्ति की आस है तौ हरिजन गुन गाय।
नतरु सुकृत भुजे बीज ज्यौं जनम–जनम पछिताय।।२१०।।

भक्तदाम संग्रह करै कथन स्रवन अनुमोद।
सो प्रभु प्यारौ पुत्र ज्यौं बैठे हरि की गोद।।२११।।

अच्युतकुल जस बेर यक जाकी मति अनुरागि।
उनकी भक्ति भजन को निहचैं होय विभागि।।२१२।।

भक्तदाम जिन–जिन कथी तिनकी जूँठनि पाय।
मों मतिसार अक्षर द्वै कीनौं सिलौ बनाय।।२१३।।

काहू के बल जोग जज्ञ कुल करनी की आस।
भक्तनाम माला "अगर" उर (बसौ) नारायणदास।।२१४।।

।। इति श्रीनाभाजी कृत मूल–भक्तमाल सम्पूर्ण।।

प्रसाद–महिमा

यह दिव्य प्रसाद प्रिया–प्रिय को।
दरसत ही मनमोद बढ़ावत परसत पाप हिय को।।
पावत परम प्रेम उपजावत भुलवत भाव पुरुष तिय को।
'भगवतरसिक' भावतो भूषण तिहि क्षण होत युगल जिय को।।

सद्विचार

- श्रीभगवद् स्मरण प्रति श्वास–श्वास में करना चाहिए।
- सद्ग्रन्थों का नित्यप्रति अध्ययन अवश्य करना चाहिए।
- भक्त अथवा भगवान् को भेददृष्टि से नहीं देखना चाहिए।
- सर्वदा सत्य भाषण करना चाहिए।
- किसी भी प्राणी को कष्ट देने की आकांक्षा नहीं होनी चाहिए।
- असत्य भाषण कदापि नहीं करना चाहिए।
- काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर इन षट् रिपुओं का दमन करके मनुष्य देह को सार्थक करना चाहिए।
- आराध्य एवं माता–पिता, गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए।
- जितना भी हो सके निज तन से परोपकार करते रहना चाहिए।
- कर्म की गति अति गहन है, इसलिए कर्मों को विशेष ध्यानपूर्वक करके निज जन्म–जीवन को सार्थक करना चाहिए।
- श्रीभगवद् चिन्तन–मनन, आराधना–उपासना करते हुए आवागमन मार्ग का उल्लंघन कर जाना चाहिए।
- मनुष्य देह प्राप्त कर श्रीभगवद् धाम में वास अवश्य करना चाहिए।
- कटु वचन कदापि उच्चारण नहीं करना चाहिए।
- गो–ब्राह्मण–सन्तजनों एवं दीन–दु:खियों की सेवा करनी चाहिए।
- समस्त प्राणियों में ईश्वर के दर्शन करते रहना चाहिए।
- मन से, वचन से, कर्म से दृढ़ तथा एकरस रहना चाहिए।
- श्रीभगवद् धामों में दर्शनार्थ अवश्य ही जाना चाहिए।
- निज आराध्य के प्रति अन्तःकरण से समर्पण भाव होना चाहिए।
- मनुष्य देह प्राप्त कर वैष्णव–दीक्षा अनिवार्य ग्रहण करनी चाहिए।
- सन्त संसर्ग अवश्य ही करते रहना चाहिए।
- सम्पूर्ण जीवन का अधिक से अधिक समय श्रीभगवद् कार्य हेतु तथा जन–कल्याण में ही व्यतीत होना चाहिए।
- अपनी नश्वरता को प्रति क्षण, प्रति पल स्मरण में रखना चाहिए।

श्रीभगवतरसिकजी महाराज कृत–

भक्त–नामावली

हम सौं इन साधुन सौं पंगति।
जिनको नाम लेत दुख छूटत, सुख लूटत तिन संगति।।
मुख्य महन्त काम रति गनपति, अज महेश नारायन।
सुर नर असुर मुनी पक्षी पशु, जे हरि भक्ति परायन।।
बाल्मीकि नारद अगस्त्य शुक, व्यास सूत कुल हीना।
शबरी स्वपच वशिष्ठ विदुर, विदुरानी प्रेम प्रवीना।।
गोपी गोप द्रोपदी कुन्ती, आदि पण्डवा ऊधो।
विष्णु स्वामी निम्बारक माधो, रामानुज मग सूधो।।
लालाचारज धनुर्दास, कूरेश भाव रस भीजे।
ज्ञानदेव गुरु शिष्य त्रिलोचन, पटतर को कहि दीजे।।
पद्मावती चरन को चारन, कवि जयदेव जसीलो।
चिन्तामनि चिद्‌रूप लखायो, विल्वमंगलहिं रसीलो।।
केशव भट्‌ट नरायन, भट्‌ट गदाधर भट्‌टा।
विट्‌ठलनाथ वल्लभाचारज, ब्रज के गूजर जट्‌टा।।
नित्यानन्द अद्वैत महाप्रभु, शची सुवन चैतन्या।
भट्‌ट गुपाल रघुनाथ जीव, मधू गुसाईं धन्या।।
रूप सनातन भज वृन्दावन, तजि दारा सुत सम्पति।
व्यास दास हरिवंश गुसाईं, दिन दुलराई दम्पति।।
श्रीस्वामी हरिदास हमारे, विपुल विहारिनि दासी।
नागरि नवल माधुरी वल्लभ, नित्य विहार उपासी।।
तानसेन अकबर करमैती, मीरा करमा बाई।
रत्नावती मीर माधव, रसखानि रीति रस गाई।।

अग्रदास नाभादि सखी ये, सबै राम सीता की।
सूर मदनमोहन नरसी अलि, तस्कर नवनीता की।।
माधोदास गुसाईं तुलसी, कृष्णदास परमानन्द।
विष्णुपुरी श्रीधर मधुसूदन, पीपा गुरु रामानन्द।।
अलि भगवान् मुरारि रसिक, श्यामानन्द रंका बंका।
रामदास चीधर निष्किंचन, सम्हन भक्त निशंका।।
लाखा अंगद भक्त महाजन, गोविन्द नन्द प्रबोधा।
दास मुरारि प्रेमनिधि विट्ठल, दास मथुरिया योधा।।
लालमती सीता प्रभुता झाली, गोपाली बाई।
सुत विष दियौ पूजि सिलपिल्ले, भक्ति रसीली पाई।।
पृथीराज खेमाल चतुर्भुज, राम रसिक रस रासा।
आशकरन जयमल मधुकर नृप, हरीदास जन दासा।।
सेना धना कबीरा नामा, कूबा सदन कसाई।
बारमुखी रैदास सभा में, सही न श्याम हँसाई।।
चित्रकेतु प्रह्लाद विभीषण, बलि ग्रह बाजैं बावन।
जामवन्त हनुमन्त गीध गुह, किये राम जे पावन।।
प्रीति प्रतीति प्रसाद साधु सौं, इन्हें इष्ट गुरु जानौं।
तजि ऐश्वर्य मरजाद वेद की, इनके हाथ बिकानौं।।
भूत भविष्य लोक चौदह में, भये होहिं हरि प्यारे।
तिन तिन सौं व्यवहार हमारो, अभिमानिन ते न्यारे।।
'भगवतरसिक' रसिक परिकर कर, सादर भोजन पावैं।
ऊँचो कुल आचार अनादर, देखि ध्यान नहिं लावैं।।

छन्द—प्रमाणिका

नमामि भक्तमाल को

पढ़ै जो आदि अन्त लौं बढ़ै जो पर्म तन्त लौं।
दहै अनन्त साल को नमामि भक्तमाल को।।१।।
कथा करै जो याहि की व्यथा रहै न ताहि की।
मिलै सो रामलाल को नमामि भक्तमाल को।।२।।
प्रकार नौ कि भक्ति जो सो अंग होत शक्ति सौं।
कहै गिरा रसाल को नमामि भक्तमाल को।।३।।
गहै अनन्य भाव है लहै सुभक्ति भाव है।
यही प्रमाण भाल को नमामि भक्तमाल को।।४।।
अभक्त भक्ति को लहै न भूलि मुक्ति को चहै।
गनै सो तुच्छ काल को नमामि भक्तमाल को।।५।।
करैं जो पाठ प्रात में सरै सुकाज गात में।
हरैहि कर्मजाल को नमामि भक्तमाल को।।६।।
मिलाय दुग्ध तक्र ते जु होत सर्पि चक्र ते।
तथा सुबुद्धि बाल को नमामि भक्तमाल को।।७।।
बहूपमा कहौं कहा कहे न पार को लहा।
बखान सूर्य ख्याल को नमामि भक्तमाल को।।८।।

श्रीनाभाजी की प्रार्थना

बातन ही हौ पतितपावन।
मोते काम परे जानहुगे बिन रन सूर कहावन।।
सतयुग त्रेता द्वापर हू के पतितन को गति आपी।
उन्हें हमें बहुतै अन्तर है हम कलियुग के पापी।।
कोउ टाँक द्वै टाँक पौसेरा बड़ी बड़ाई सेर।
हौं पूरन पतिताई ऐसो ज्यौं पाषाननि मेर।।
हौं दिन मनि खद्योत आन खल अविद्या को जु उजागर।
गोपद पावन के न सरवरै हौं दुरमति जल सागर।।
पतितपावन है विरद् तिहारो सोइ करौ परमान।
पाहन नाव पार करौ "नाभा" के हरि पकरौ कान।।

श्रीभक्तमालजी की आरती

इस धन्य नाभा भारती की, आरती आरति हरै।
यह भक्त भगवत् की कथा, सब विश्व का मंगल करै।।
नर जाति जब माया विवश, अज्ञान तम में पग गई।
जन भारती आभा तभी, जग जगगई जगमग गई।।
अज्ञान माया मोह तम की, कालिमा कलई धुली।
सत्प्रेम समता सत्य सुख शुचि, कंज कलिकायें खिलीं।।
उल्लूक खल कलिमल सकल, उडगन प्रभाहत हो गये।
तब सब पथिक सुन्दर सुखद, हरिभक्ति पथ को पा गये।।
इस भक्त माला के सकल, हरि भक्तजन दाया करो।
सच्ची अहिंसा भक्तिमय, विज्ञान दै माया हरो।।